डरो भगवान से

सेवा में,

श्रीमान् मनोहर लाल खट्टर जी,
मुख्यमंत्री,हरियाणा
चण्डीगढ़।

विषय :- संत रामपाल दास महाराज व उनके अनुयाईयों के ऊपर हो रहे अत्याचार व अन्याय की जानकारी देने के लिए तथा उनकी रोकथाम करने के लिए प्रार्थना पत्र।

श्रीमान् जी,

हम संत रामपाल दास जी महाराज के भारतवर्ष में लगभग 90 लाख अनुयाई आपको हमारे गुरू जी तथा हम पर हो रहे अत्याचार व अन्याय की जानकारी देना चाहते हैं तथा अध्यात्म ज्ञान का शुद्धिकरण चाहते हैं। नवम्बर 2014 में बरवाला आश्रम के संचालक संत रामपाल दास जी तथा उनके अनुयाईयों पर कानून को ताक पर रखकर झूठे मुकदमें बनाए गए। ये मुकदमें हिसार प्रशासन द्वारा बनाए गए। उनकी पुनः जाँच आप स्वयं अपने विश्वास पात्रों से करवाकर सत्य को जाँचकर सर्व मुकदमों को उठाऐं। वरना आप राजा हैं, राजा को भी सब दोष लगते हैं। संत रामपाल दास जी अध्यात्म के पूर्ण गुरू हैं। अन्य हिन्दू गुरूओं को अपने शास्त्रों का ज्ञान नहीं है।

संत रामपाल दास जी ने आप जी को पत्र द्वारा सर्व घटना से अवगत करवाना चाहा था। वह पत्र जेल से भेजना चाहते थे। परंतु जेल प्रशासन ने यह कहकर नहीं भेजने दिया कि यह सरकार के खिलाफ है और उसे फाड़ फैंका। उसको एक अन्य बंदी ने लिखा था। उस पत्र की एक कॉपी वह जमानत पर आया तो साथ लाया था तथा उसके विषय में संत रामपाल दास जी ने जेल में बंद अनुयाईयों को बताया था। जो बाहर आकर उन्होंने हमें बताया। उस पत्र का कुछ प्रकरण हम उन्हीं के शब्दों में तथा कुछ सच्चाई हम अपनी तरफ से लिखकर भेज रहे हैं जो संलग्न है। आशा है कि आप निष्पक्ष जाँच करके कतार्थ करेंगे तथा परमात्मा से डरकर अपनी मुख्यमंत्री/राजा की ड्यूटी निभाऐंगे।

संत रामपाल जी महाराज द्वारा जेल से प्रेषित पत्र निम्न है :-

सेवा में,

माननीय श्री मनोहर लाल खट्टर जी,
मुख्यमंत्री, हरियाणा।

विषय :- धर्मनीति को आधार मानकर परमेश्वर और मत्यु को याद रखकर मेरे तथा मेरे अनुयाईयों पर किए गए मुकदमों पर पुनः विचार करने हेतु तथा जनहित में अध्यात्म के विकत (बिगड़े) रूप को शास्त्रोक्त एक ज्ञान देकर शुद्ध करने के लिए सर्व संतों की पंचायत बुलाने के लिए निवेदन ताकि भ्रमित मानव को एक सत्य भक्ति मार्ग मिल सके, इस परोपकार के लिए प्रार्थना पत्र।

श्रीमान् जी,

मैं रामपाल पुत्र श्री नंदराम (लाल) जाट किसान गाँव-धनाना, तहसील-गोहाना, जिला-सोनीपत (हरियाणा) का मूल निवासी हूँ। मेरी सात पीढ़ियों का तो मुझे ज्ञान है कि किसी ने चिड़िया तक नहीं मारी, न कोई अपराध किया, न कोई पुलिस केस हुआ। मेहनत-किसानी करके निर्वाह किया। घर में किसी आवश्यक वस्तु का अभाव नहीं था। मैं जे.ई. (Junier Engineer) का कोर्स करके दिनाँक 17-02-1977 को

सिंचाई विभाग हरियाणा में जूनियर इन्जीनियर के पद पर नियुक्त हुआ। अठारह वर्ष बेदाग नौकरी करके सन् 1995 में स्वेच्छा से त्याग पत्र देकर नौकरी छोड़कर अध्यात्म मार्ग पर चला हूँ।

❖ मैंने सदा परमात्मा तथा मौत से डरकर जीवन जीया है। अठारह वर्ष की जे.ई की नौकरी के दौरान तथा सन् 1995 से सन् 2014 तक उन्नीस (19) वर्ष आध्यात्मिक गुरू के पद के दौरान कोई संपत्ति संग्रह नहीं की।

प्रमाण :- सन् 2014 में माननीय पंजाब तथा हरियाणा हाई कोर्ट ने सर्व राज्यों, विभिन्न विभागों को आदेश दिया था कि बाबा रामपाल के नाम जो भी संपत्ति है, उसका ब्यौरा दें। सर्व जाँच के पश्चात् पता चला कि मुझ रामपाल के नाम कोई व्यक्तिगत संपत्ति नहीं है।

जितने आश्रम हैं, वे ट्रस्ट की संपत्ति है। वह किसी व्यक्ति विशेष यानि चेयरमैन या सदस्य के नाम नहीं होती। यदि ट्रस्ट फेल हो जाता है तो वह संपत्ति या तो सरकार लेती है या अन्य संबंधित शाखा को ट्रांसफर हो जाती है।

❖ मैं अभिमान नहीं करता, सच्चाई बता रहा हूँ कि परिवार त्यागकर परमार्थ पर लगा हूँ। उसके पश्चात् मुड़कर घर नहीं गया हूँ, न कोई रूपया-पैसा घर दिया है। मेरे गुरू स्वामी रामदेवानंद जी महाराज ने अपने हजारों शिष्यों में से परखकर मुझे सन् 1994 में गुरू पद दिया था और ईमानदारी व सत्य के साथ प्रचार करके जीव कल्याण का आदेश दिया था। एक वर्ष तो शनिवार-रविवार की छुट्टियों में प्रचार किया। फिर कार्य और अधिक बढ़ गया तो मई 1995 में नौकरी से त्याग पत्र देकर प्रचार कर रहा हूँ। त्याग पत्र सिंचाई विभाग, चण्डीगढ़ हरियाणा द्वारा स्वीकत है।

❖ मैं ऐसे कुल में नहीं जन्मा हूँ जिसका खानदानी कार्य कर्मकाण्ड करके निर्वाह चलाना हो जिसकी मजबूरी होती है निर्वाह के लिए यजमानों से पैसे लेना।

❖ जे.ई. की नौकरी में परिवार पोषण ठीक से चल जाता है। यह सभी जानते हैं।

❖ मेरे या मेरे परिवार के सदस्य के नाम कोई अनाप-सनाप संपत्ति नहीं है। मेरे नाम है ही नहीं। मेरे घर त्यागने के पश्चात् जो कुछ हुआ होगा, वह उनकी मेहनत-मजदूरी से हुआ होगा या रिश्तेदारों या चाचे-ताऊओं के सहयोग से हुआ होगा।

❖ मेरे ऊपर तथा मेरे अनुयाईयों पर बने मुकदमें पूर्ण रूप से झूठे हैं। हो सकता है आपको जो पहले वाली सरकार के विश्वासपात्र रहे उच्च अधिकारियों के द्वारा सच्चाई से परिचित नहीं कराया गया होगा। इसके लिए आप अपने विश्वास पात्र ईमानदार, परमात्मा और मत्यु को याद रखने वाले अधिकारियों से सर्व मुकदमों की जाँच करवा लें, अपनी तसल्ली के लिए।

❖ हमारे ऊपर अत्याचार किए गए हैं और अब भी चल रहे हैं। हिसार में दर्शनार्थ आने वाले अनुयाईयों, बहन-बेटियों को पुलिस लाठियों से बेरहमी से पीटती है। यह सब आपको पता भी लग रहा है।

❖ मेरी माता जी का देहांत हुआ तो मेरे को न तो उनके अंतिम संस्कार पर और न उनकी आत्मा की शांति के लिए किए पाठ पर शामिल होने जाने दिया। जबकि माननीय पंजाब तथा हरियाणा हाई कोर्ट इस पक्ष में थी कि बाबा रामपाल को उसकी माता जी की अंतिम अरदास में जाने दिया जाए, परंतु आपके प्रशासन ने ऐसी झूठी रिपोर्ट हाई कोर्ट में दी जिसके पश्चात् जज साहेबान पीछे हट गए।

जो आप (प्रशासन) की रिपोर्ट थी, उसके आधार से माननीय हाई कोर्ट ने मेरी अर्जी खारिज करते हुए यह टिप्पणी की :- सरकार की रिपोर्ट को देखते हुए हम इस निष्कर्ष पर पहुँचे हैं कि बाबा रामपाल आतंकी नहीं है। इसके अनुयाई इनके दर्शन के लिए तड़फ रहे हैं। बाबा रामपाल की पेशी वी.सी. से होती है तो भी वे बहुत सँख्या में हिसार शहर में जेल के आसपास पहुँच जाते हैं। वे कोई अवसर दर्शन का गँवाना नहीं चाहते। ऐसे में यदि बाबा रामपाल जेल से बाहर आएगा तो वे उसके दर्शन के लिए उमड़ पड़ेंगे। उनको

रोकने के लिए लाठीचार्ज करनी पड़ेगी जिससे भगदड़ मचेगी और व्यक्तियों की मौत हो सकती है और रामपाल को वापिस जेल लाना मुमकिन नहीं होगा। कानून व्यवस्था खराब हो जाएगी और आपकी सरकार अस्थिर हो जाएगी।

यानि आप जी को अपने राज को बनाए रखने के लिए मेरी तथा मेरे परिवार, रिश्तेदार तथा मेरे 90 लाख अनुयाईयों की आत्मा दुःखा दी। आप जी ने उनकी हाय लगवा ली। इसके विषय में कबीर परमेश्वर जी ने कहा है कि :-

कबीर, गरीब को ना सताईये, जाकी मोटी हाय। बिना जीव की श्वांस (धौंकनी) से, लोह भस्म हो जाय।।

भावार्थ :- कबीर परमेश्वर जी ने मानव को परमात्मा का विधान बताया है। कहा है कि मत पशु की खाल से बनी धौंकनी जो पूर्व समय में लुहार कारीगर अहरण की भट्ठी की अग्नि को तेज करने के उद्देश्य से चलाया करते थे जो पंखे की तरह हवा देती थी, उसकी श्वांस की वायु से अग्नि इतनी तेज हो जाती थी कि भट्ठी में डाले गए लोहे को भस्म कर देती थी। उसके चलने पर ऐसी ध्वनि होती थी जैसे कोई ताकतवर किसी गरीब असहाय को पीटता है। वह हाय-हाय करता है।

उसी प्रकार यदि गरीब-असहाय को सताया जाएगा तो उस जीवित की श्वांस की हाय सताने वाले को उस फौलाद की तरह नष्ट कर देगी। यहाँ लाखों की हाय आप तथा आपके सहयोगियों को लग चुकी है। इसका प्रभाव कब दिखेगा, उसका इंतजार करेंगे और दुनिया को बताऐंगे जैसे भगवान दास (डी.एस.पी.) और सुभाष (बराला) का बताया है।

मेरी बेटी मंजू बाला ने कोर्ट में शपथ पत्र दिया कि मैं अपने पापा की जिम्मेदारी लेती हूँ कि उनको तय समय पर जेल में ले आऊँगी। सरकार ने बेटी पर भी विश्वास नहीं किया। बेटी बचाओ-बेटी पढ़ाओ वाले नियम को भी ताक पर रख दिया। बेटी की आत्मा रोई। एक दिन आप भी रोओगे जब हमारी सच्चाई का पता चलेगा और आपके पाप फलेंगे।

आदरणीय मुख्यमंत्री श्री मनोहर लाल जी को कुछ आध्यात्मिक प्रमाण देकर परमात्मा के विधान से परिचित करवाना चाहता हूँ क्योंकि मैंने परमात्मा के विधान को गहराई से शास्त्रों तथा परमात्मा से मिले संतों से जाना है।

मैं आपको कंस की श्रेणी में नहीं मानता क्योंकि आप परमात्मा से डरने वाले हैं। आपके गुरू जी श्री ज्ञानानंद जी महाराज हैं। हमारे ऊपर आप क्यों सख्त हैं, इसका ज्ञान तो आप ही को अधिक है। भक्तों, संतों को सताने के परिणाम का इतिहास गवाह है कि बहुत बुरा होता है।

उदाहरण :- मथुरा का राजा कंस था। इसका जन्म उसी माता-पिता से हुआ जिससे देवी ''देवकी'' का हुआ था जिसकी पवित्र कोख से श्री कष्ण जी जैसे परमात्मा का जन्म हुआ यानि स्वयं श्री विष्णु जी का जन्म हुआ।

कंस बुरा व्यक्ति नहीं था। वह अपनी बहन देवकी को विवाह के बाद विदा करने जा रहा था और स्वयं रथ को चला रहा था। रिवाज के अनुसार अपने शहर की सीमा तक भाई व अन्य परिवार साथ जाता था। आकाशवाणी हुई कि हे कंस! तुझे मारने वाला तेरी बहन देवकी के गर्भ से जन्म लेगा जो आठवीं संतान होगी। यह अटल सत्य है। इसे सुनकर साथ गए अन्य मंत्री व राज दरबारियों ने कंस को राय दी कि कोई उपाय करो। कंस ने सबके साथ राय करके निर्णय लिया कि दोनों को मार दिया जाए। कंस बुरा नहीं था। उसने अपनी बहन की प्रार्थना मान ली कि हमें मार मत, जेल में रख ले। कंस ने यह बात मान ली और आगे क्या-क्या किया कंस ने अपनी जान बचाने के लिए, आठ भांजियों को मार डाला। आसपास के क्षेत्र के नवजात हजारों शिशुओं को मार डाला कि कहीं इधर-उधर मेरे मारने वाले ने जन्म ले लिया होगा क्योंकि आठवीं कन्या को मारने के प्रयत्न में निष्फल हुआ था। लड़की आकाश में चली गई और बता गई कि तुझे

मारने वाला उत्पन्न हो चुका है। सर्व अत्याचार करके भी परमात्मा के विधान को राजा बदल नहीं सका। अंत में वही हुआ जो आकाशवाणी ने बताया था।

❖ तर्क के साथ विवेचन :- यदि कंस को कोई ठीक धर्मगुरू मिला होता तो वह कंस को मौत से तो नहीं बचा सकता था, परंतु अत्याचार करके किए गए पापों से उसको अवश्य बचा सकता था। वह राजा को बताता कि हे राजन! यदि आप आकाशवाणी को सत्य मानते हो तो उस घटना से आप कभी नहीं बच सकते। आप अपनी बहन को स्वतंत्र कर दो। यदि भगवान के विधान को राजा अपने राज्य की शक्ति से बदल देगा तो वह तो परमात्मा से भी बड़ा हुआ जो कभी संभव नहीं हो सकता। हे राजन कंस! आप कन्याओं को मत मारो। भक्ति करके शुभ कर्म धर्मयज्ञ करके अपने पुण्य कर्मों की वद्धि कर। आपको तो स्वर्ण अवसर मिला है कि आपकी मत्यु के समय का पता चल गया है। वह भी बहन देवकी की आठवीं संतान से। अभी तो विवाह हुआ है। उस समय बच्चों के जन्म में 3-4 वर्ष का अंतर आम होता था। फिर आठवीं संतान जन्म लेकर 15-16 वर्ष का ही युवा हो जाता था। युद्ध करने योग्य हो जाता था। प्रमाण :- महाभारत के युद्ध में अर्जुन पुत्र अभिमन्यु मात्र चौदह वर्ष का था जब कौरवों के चक्रव्यूह में युद्ध करके दुश्मन की सेना के छक्के छुड़ा दिए थे।

❖ कंस की शेष आयु की गणना करके बता सकता था कि $4 \times 8 = 32 + 16 = 48$ वर्ष शेष थी। एक परमात्मा तथा दूसरी मत्यु इस संसार में सत्य हैं। आप (कंस) मौत को याद करके शुभ कर्म कर लो। भजन करके करले राम नाम की लूट। परंतु ऐसा मार्गदर्शक संत कंस को नहीं मिला। जिस कारण से घोर पाप पर पाप करके मरा। संसार में निंदा का पात्र बना जिसका संसार में कोई अपने बच्चों का नाम भी नहीं रखता।

❖ आदरणीय मुख्यमंत्री श्री मनोहर लाल जी! आप बुरे नहीं हैं, परंतु सच्चे आध्यात्मिक मार्गदर्शक गुरू का अभाव स्पष्ट दिखाई दे रहा है।

❖ जीवित तथा वर्तमान में घटित दुःखदाई घटनाओं का वर्णन करता हूँ।

❖ दिनाँक 19-11-2014 को स्वास्थ्य लाभ प्राप्त करके पुलिस को कह दिया कि मुझे हाई कोर्ट ले चलो। मेरी गिरफ्तारी के पश्चात् मेरे ऊपर मुकदमें बनाने की जिम्मेदारी तीन डी.एस.पी. 1. भगवान दास, 2. विरेन्द्र सिंह तथा 3. राजबीर सिंह सैनी की जाँच टीम को दी गई। सबसे अधिक परेशानी भगवान दास ने ही मुझे दी। मैंने उनको भगवान का विधान बताया था कि सर जी! परमात्मा से डरकर कार्य करना, झूठे मुकदमें ना बनाना। न तो आप सदा इस पद पर रहोगे, न यह शरीर सदा संसार में रहेगा। एक दिन परमात्मा के दरबार में जाना है।

मेरे यह वचन सुनकर उसने ये शब्द कहे, *''मैंने चार डिग्री प्राप्त कर रखी हैं। मैं तेरी बातों में आने वाला नहीं हूँ। तेरे ऊपर ऐसे मुकदमें बनाऐंगे। तेरे को फाँसी लगेगी। यदि फाँसी से बच गया तो आजीवन कारावास में रहेगा। तेरे को कटघरे में खड़ा करके तेरे खिलाफ ठोककर गवाही दूँगा। यदि उपरोक्त तेरे साथ नहीं हुआ (फाँसी या आजीवन कारावास) तो मेरा नाम भगवान दास नहीं। मैं तेरे को शक्ल नहीं दिखाऊँगा।''*

☛ {यदि मेरी बात पर अविश्वास हो तो उस समय उपस्थित अन्य दो डी.एस.पी. से पता कर सकते हैं कि भगवान दास जी ने ये वचन कहे थे या नहीं।}

बड़े दुःख के साथ लिख रहा हूँ कि मुझे आभास था कि इस व्यक्ति को परमात्मा का बड़ा झटका लगेगा। परंतु यह विश्वास नहीं था कि इतनी शीघ्र परमात्मा खबर लेगा। सुना तो यह है जो सत्य भी है कि परमात्मा के घर देर है, अंधेर नहीं। परमात्मा का विधान है कि ''भोगेगा अपना किया रे।'' मार्च 2017 में परमात्मा ने कर्म चक्र चलाया। ऐसी परिस्थिति बनी कि ''उसके परिवार के व्यक्तियों ने तीन मर्डर कर दिए जिसमें भारतीय संविधान की धारा 302 के तहत तीन मर्डर का मुकदमा श्री भगवान दास डी.एस.पी. पर

भी बना क्योंकि वे उस समय हिसार के डी.एस.पी. थे तथा मर्डर वाले मौके पर अपने घर चला गया था, 302 के केस में डी.एस.पी. का नाम आने के कारण तथा उस केस के रिजल्ट का ध्यान करके इतना भयभीत हो गया कि उसे सहन नहीं कर पाया। जिस कारण से उन्होंने खुद गोली मारकर आत्महत्या कर ली। मुझे कोई खुशी नहीं है, अपितु दुःख है कि वर्तमान में मानव परमात्मा से डरना भूल चुका है। इसलिए अपराधों तथा झूठे मुकदमों की वद्धि हो रही है। परमात्मा के विधानानुसार स्पष्ट करना चाहता हूँ कि जिस-जिस भी व्यक्ति ने यानि मंत्रीगण, मुख्यमंत्री जी या अन्य नेताओं व पुलिस व अन्य अधिकारी ने बरवाला की घटना में अत्याचार-अन्याय में जितना योगदान दिया है, उस-उसको उसके कर्मानुसार भगवान दास की तरह प्रसाद अवश्य मिलेगा चाहे समय कितना भी लगे। या तो अत्याचार करना बंद कर दो, अन्यथा यह दशा होगी और दुनिया में बुरा इतिहास बनेगा। इस पत्र को संभालकर रख लेना।

❖ यह भी सर्व विदित है कि आप जी ने (मुख्यमंत्री जी ने) बरवाला की घटना की जिम्मेदारी अपने विश्वास पात्र व भारतीय जनता पार्टी के प्रदेशाध्यक्ष श्री सुभाष बराला को सौंपी थी। उनकी देखरेख में सब हुआ। हमारे आश्रम व अनुयाईयों को किसी औरत से जोड़कर बदनाम किया और मीडिया पर दबाव बनाकर प्रचार कराया गया ताकि भविष्य में कोई मेरे पास न आए और वर्तमान अनुयाई भी भाग जाऐं। परंतु परमात्मा से कुछ नहीं छिपा है।

❖ नवम्बर 2014 के पश्चात् वर्तमान तक लगभग तीन लाख नए अनुयाई जुड़े हैं। पहले वाले टस से मस नहीं हुए हैं।

❖ हमारे को किसी स्त्री से जोड़कर बदनाम करने वाले सुभाष बराला जी को भी वैसा ही प्रसाद परमात्मा कबीर जी ने दे दिया है। दिनाँक 04-08-2017 को सुभाष बराला के पुत्र विकास बराला पर एक IAS की बेटी से छेड़छाड़ करने व अपहरण करने का आरोप लगा और मीडिया द्वारा वह प्रसाद मिला। लड़का जेल गया, जमानत को तरसा। आगे भी जिस-जिसको परमात्मा का प्रसाद मिलेगा, उसकी जानकारी जनता को हम देते रहेंगे।

इस पत्र में संत रामपाल जी द्वारा बताई घटना अधिक हैं। कुछ घटना हमने अपनी जानकारी से लिखी हैं ताकि आप संभल जाऐं, भगवान से डरें। अत्याचार बंद करें।

❖ राज का नशा शराब जैसा होता है।

सम्पूर्ण अध्यात्म ज्ञान के अभाव से राजा को राज का ऐसा चस्का लगता है, उसे उस समय समझाना अपनी जान जोखिम में डालना होता है क्योंकि राजा ने जो उद्देश्य बनाया है, वह उसके उद्देश्य के अनुकूल राय देने वालों की बातें सुनना पसंद करता है। यदि कोई उसके उद्देश्य के विपरित राजा के हित में भी बातें करता है तो उसको प्रताड़ना मिलती है। परंतु बाद में एहसास होता है।

उदाहरण :- जिस समय राजा दुर्योधन पाण्डवों की पत्नी द्रोपदी (कृष्णा) को भरी सभा में सर्व कौरव तथा पाण्डवों के अतिरिक्त भीष्म पितामह, गुरू द्रोणाचार्य, कर्ण योद्धा तथा भक्त विदुर भी उपस्थित थे। विदुर के अतिरिक्त किसी ने भी राजा दुर्योधन को द्रोपदी को नंगा न करने को नहीं कहा, सब तमाशा देखते रहे।

भक्त सच्चे पंचायती विदुर जी खड़े हुए और कहा :-

विदुर कही सभा में न्याय की बानी। माने नहीं दुर्योधन राजा अभिमानी।
अपने कुल की इज्जत उतारै। अबला खड़ी सभा में पुकारै।।
कौरव–पाण्डव भाई–भाई। ऐसा जुल्म ना कर अन्यायी।।
विदुर कहा यह बंधु थारा। एकै कुल एकै परिवार।।
राजा कहा अभिमानी आदेशा। दुःशासन मारो यह देत उपदेशा।।

विदुर के मुख पर लगा थपेरा। तू तो है पाण्डवों का चेरा (नौकर)।।
तू तो है बांदी का जाया। भीष्म, द्रोण, कर्ण मुस्काया।।
सभा छोड़ गया जन सूच्चा। प्रभु दर पर रहा सिर ऊँचा।।
भीष्म, द्रौण, कर्ण कही ना आढ़ी तीछी। तातें महाभारत में ता संग ऐसी बीती।।

भावार्थ :- जिस समय दुर्योधन राजा के आदेश से उसका भाई दुःशासन द्रोपदी जी के शरीर से साड़ी उतारकर नंगा करने के लिए चला तो उस सभा में उपस्थित गणमान्य व्यक्तियों में से केवल भक्त विदुर उठा और राजा दुर्योधन की ओर मुख करके बोला कि कौरव और पाण्डव आपस में चचेरे भाई हो। दोनों की इज्जत साझली (एक) है। हे दुर्योधन राजा! ऐसा अन्याय न कर। पिछले इतिहास में कोई प्रमाण नहीं है कि सभा में स्त्री को नंगा किया गया हो। आप एक कुल के व्यक्ति हैं। दुनिया के लोग कहेंगे कि अपनी इज्जत आप उतार ली। यह बात सुनकर राजा दुर्योधन अहंकारवश अपने भाई दुःशासन से बोला कि यह विदुर तो पाण्डवों का चेला है। सदा इन्हीं का पक्ष लेता रहा है। इसको थप्पड़ मार। दुःशासन ने अपने चाचा विदुर को थप्पड़ मारा और कहा कि तू बांदी से जन्मा है। इसलिए तेरी गुलाम जैसी सोच है, क्षत्रीय वाली नहीं है।

सच्चे पंचायती विदुर जी सभा त्यागकर चले गये। अपनी आँखों अबला पर अत्याचार नहीं देखा। भीष्म, द्रोणाचार्य तथा योद्धा कर्ण ने कुछ भी बात नहीं कही। सभा में बैठे रहे। परमात्मा की कपा से द्रोपदी का चीर अनन्त हो गया। चाहकर भी वे असुर उस भक्तमति को नंगा नहीं कर सके।

भीष्म, द्रोणाचार्य, कर्ण में से एक भी खड़ा होकर कह देता कि खबरदार! जो अबला का सभा में अपमान किया तो ठीक नहीं रहेगा। फिर किसी की हिम्मत नहीं थी कि द्रोपदी के वस्त्र को छू लेता। परंतु अपराधी राजा दुर्योधन का मलीन अन्न खाने से उनकी बुद्धि मलीन हो गई थी। उनका विवेक समाप्त हो गया था। सभा में युवती को नंगा किया जा रहा था। वे तीनों किसलिए उपस्थित रहे? स्पष्ट है द्रोपदी को नंगा देखने के लिए। उनमें दोष भरा था। दादा भीष्म, गुरू द्रोणाचार्य, कर्ण योद्धा इनकी बुद्धि ने काम नहीं किया। दुर्योधन को मना करना चाहिए था। यदि नहीं मानता तो विदुर की तरह सभा त्यागकर चला जाना चाहिए था। एक सच्चे पंचायती का यह कर्तव्य है। उसको दोष नहीं लगता।

❖ **वर्तमान में विधान सभा तथा संसद सभा में जब अधिवेशन (पंचायत) चलता है तो जिनकी बात राजा नहीं मानता तो वे सभा छोड़कर बाहर चले जाते हैं।**

❖ **हम जिन महानुभावों को अपना आदर्श मानते रहे हैं। हमने उनके आचरण को विवेक से नहीं समझा। उनमें एक गुण था तो कई अवगुण भी रहे हैं। सूक्ष्मवेद में बताया है कि महाभारत के युद्ध में उस सभा में उपस्थित सर्व कौरवों तथा भीष्म, द्रोणाचार्य गुरू तथा कर्ण की दुगर्ति के साथ मत्यु हुई। उसका यह कारण रहा कि जो सक्षम होकर सभा में सच्ची बात नहीं कहता, वह महापराधी माना जाता है।**

❖ **इसी प्रकार हरियाणा सरकार कुछ स्वार्थी राजनीतिक लोगों व स्वार्थी भ्रष्ट अधिकारियों से भ्रमित होकर अभिमानवश हम पर अत्याचार तथा अन्याय (झूठे मुकदमें बनाकर) कर रही है। हमारी द्रोपदी वाली पुकार को तीन वर्ष से अनदेखा कर रही है।**

❖ **हरियाणा में विपक्ष के नेता सरकार को अन्याय-अत्याचार करने से रोक सकते हैं या टोक (न करने को कह) सकते हैं, परंतु उन्होंने भी भीष्म, द्रोणाचार्य तथा कर्ण की तरह चुप्पी साध रखी है जो नीति के विरूद्ध है। इसका परिणाम भी उनको भोगना पड़ेगा। हमारे ऊपर लगाए गए आरोप पूर्ण रूप से गलत हैं। आश्रम में वद्ध, बच्चे, रोगी, बहन-बेटियाँ भी उपस्थित थी जिनको भूखा-प्यासा रखा गया। दवाई-भोजन, बिजली-पानी आना बंद कर दिया गया। ऐसा कितना बड़ा जुर्म था। एक N.B.W. (Non Bailable Warrant) का मामला था। हजारों N.B.W. पैंडिंग पड़े हैं। उन पर अत्याचार नहीं हुआ। रोग के कारण कोर्ट नहीं पहुँचने के कारण**

यह जुल्म ढ़हाया गया। दिल्ली के इमाम के प्रति आज तक कई N.B.W. पड़े हैं, उसे कोई नहीं टोकता। एक हांडी में दो पेट न्यायसंगत नहीं होते।

❖ हम द्रोपदी की तरह परमात्मा से ही दुआ कर रहे हैं। ''कभी तो दीन दयाल के भिनक पड़ेगी कान।।''

❖ सरकार राजनीति से हटकर परमात्मा से डरकर विचार करे कि क्या हम आतंकी हैं या हम देशद्रोही हैं जो ऐसी धाराऐं मुकदमा नं. 428/2014 बरवाला में जोड़ी गई हैं।

❖ हमारी बहन-बेटियों की मत्यु तथा एक बच्चे की मत्यु पुलिस की बरबर्तापूर्ण कार्यवाही से हुई। उनकी हत्या का मुकदमा हमारे ही ऊपर बना दिया। तुम्हारा कैसे भला होगा?

❖ दर्शनार्थ आने वाली बहन-बेटियों, बच्चों-बुजुर्गों को लाठी-डण्डों से पीटा जाता है। वे कभी भी हद पार नहीं करते। पुलिस जहाँ रोकती है, वहीं रूक जाते हैं। उनकी नजर केवल गुरू जी के दर्शन के लिए पसरी रहती है। फिर भी आपको खुश रखने के लिए उन पर झूठे मुकदमें, बरबर्ता अभी भी जारी है।

मुख्यमंत्री जी! भर लो पाप का घड़ा, बाँध लो पाप की गठरी। संसार छोड़कर जाओगे तो स्वयं ही सिर पर रखकर चलोगे। आपके साथ कोई अंगरक्षक नहीं होगा और न ही कोई नौकर उसे उठाने को मिलेगा। आपको पूर्व जन्म के तप से राज मिला है।

सूक्ष्मवेद में परमात्मा का विधान इस प्रकार लिखा है :-

तप से राज, राज मध्य मानं। जन्म तीसरे शुकर स्वानं।।

भावार्थ :- तप के प्रतिफल में जीव को राज मिलता है। राजा में अभिमान रूपी महादोष अवश्य घर कर जाता है। जिसके कारण अनेकों अपराध करता है। राज को बनाए रखने के लिए सैंकड़ों सैनिक या नागरिक मरवा देता है। इस कारण से राज व शरीर चले जाने के पश्चात् तीसरे जन्म (राजा वाले जन्म के पश्चात्) शुकर यानि सूअर तथा स्वान यानि कुत्ते के जीवन को प्राप्त करता है। राज का सुख पाँच-दस वर्ष, परंतु पापों का कष्ट हजारों वर्ष प्राप्त होता है। इसलिए राजा को चाहिए कि परमात्मा तथा मत्यु को याद रखकर धर्मनीति को आधार मानकर पाप से डरकर राज करे या त्याग दे।

❖ आज से लगभग 40-50 वर्ष पूर्व पुलिस के अधिकारी-कर्मचारी भी परमात्मा से डरकर कार्य करने वाले होते थे। यदि उनको कोई सिरफिरा राजनेता किसी पर झूठा बड़ा मुकदमा (हत्या या देशद्रोह) बनाने को कहता तो साफ मना कर देते थे। आप चाहे सस्पैंड करो, चाहे बदली करो, यह अत्याचार हम नहीं करेंगे। उस बेचारे निर्दोष को बीस वर्ष जेल में काटने पड़ेंगे। उसकी आत्मा, उसकी पत्नी व बच्चों की आत्मा की हाय हमें लगेगी। हमारे बाल-बच्चों को या हमको परमात्मा का कोप झेलना पड़ेगा।

परंतु वर्तमान में कुछेक को छोड़कर सब राजनेता, अधिकारी-कर्मचारी परमात्मा से बिल्कुल नहीं डरते। जिस कारण से उनको तथा उनके परिजनों को देर-सवेर खामियाजा भुगतना पड़ता है।

उदाहरण जो पूर्व में डी.एस.पी. हिसार भगवान दास तथा हरियाणा भाजपा प्रदेशाध्यक्ष श्री सुभाषा बराला का बताया है तथा सन् 2006 में हमारे साथ हुए करौंथा काण्ड में भी जिन-जिन ग्रामीण व्यक्तियों ने हमारे साथ अन्याय करने की भूमिका निभाई थी, उनको भी परमात्मा ने कर्म अनुसार प्रसाद दिया है जिनका ब्यौरा हमने पुस्तक ''भोगेगा अपना किया रे'' में लिखकर जनता को दिया।

आने वाले समय में और भी परमात्मा के कोप के भागी होंगे, उनका ब्यौरा समाज को दिया जाएगा ताकि भविष्य में कोई ऐसा अत्याचार व अन्याय न करे। परमात्मा से डरे। शुभ कर्म करे, पाप का भागी न बने। जीवन ज्यादा नहीं है, जाते देर नहीं लगेगी।

आप जी को चाहिए कि परमात्मा के समक्ष अपनी गलती का प्रायश्चित करें तथा 950 के लगभग अनुयाई जवान, बूढ़े, बेटियाँ देशद्रोह व हत्या के झूठे मुकदमों में ट्रॉयल झेल रहे हैं। कई भक्त हरियाणा, पंजाब, महाराष्ट्र, मध्यप्रदेश, राजस्थान, छत्तीसगढ़, दिल्ली, जम्मू, हिमाचल, उत्तर प्रदेश, उत्तराखंड, बिहार,

झारखंड, गुजरात, नेपाल आदि-आदि राज्यों से महीने या बीस दिन में कभी-कभी सप्ताह में तारीखों पर आते हैं। न घर का कार्य कर पा रहे हैं, न नौकरी के लिए कोशिश, न पढ़ाई कर पा रहे हैं। खर्च पर खर्च हो रहा है। परंतु वे परमार्थ के मार्ग को त्याग नहीं सकते क्योंकि उनको सम्पूर्ण अध्यात्म ज्ञान तथा सब कर्मों से सत्संग के माध्यम से पूर्ण परिचित करा दिया गया है। ये हिंसा, अत्याचार नहीं कर सकते, परंतु परमार्थी मिशन की सफलता के लिए अत्याचार-अन्याय सहन करना मजबूरी है। ये इसे त्याग नहीं सकते।

हमारा मिशन है :- मानव समाज को शास्त्रोक्त अध्यात्म ज्ञान तथा भक्ति विधि बताकर भक्ति करवाकर पूर्ण मोक्ष प्राप्त करवाऐं जो मानव जीवन का मूल कार्य है।

सर्व सामाजिक बुराईयाँ छुड़वाऐं :- जैसे दहेज न देना व न लेना, विवाह में कोई दिखावा या अधिक खर्च नहीं करना। हमारे गुरूदेव का सख्त आदेश है कि विवाह में पाँच-दस व्यक्ति जाऐं। सामान्य विधि से बिना भात, बिना बारात व विशाल भोज किए बिना ही विवाह रस्म शास्त्रों में वर्णित विधि से करें। हमारे गुरू जी उदाहरण देते हैं कि श्री देवी भागवत महापुराण के तीसरे स्कंद में प्रमाण है कि जिस समय देवी दुर्गा जी ने अपने तीनों पुत्रों (श्री ब्रह्मा, श्री विष्णु तथा श्री शिव) का विवाह किया। उस समय न कोई भाती था, न कोई बाराती, न कोई बैंड-बाजा, न डी.जे. था। न मिठाई के लिए कड़ाही चढ़ाई थी। कोई भी भोजन-भण्डारा विशेष नहीं किया था।

देवी दुर्गा ने श्री ब्रह्मा जी को देवी सावित्री देकर, श्री विष्णु जी को देवी लक्ष्मी तथा श्री शिव जी को देवी पार्बती देकर कहा कि ये तुम्हारी पत्नियाँ हैं। आप अपने-अपने स्थानों (लोकों) में जाओ और अपना घर बसाओ। जिनसे यह सारा संसार उत्पन्न हुआ।

इसी प्रकार हमारे मिशन में ठीक इसी तरह विवाह रस्म अदा की जाती है। जिसके परिणाम स्वरूप बेटी बचाओ वाला कार्यक्रम सफल हो रहा है। बेटी को दहेज तथा विवाह व भात-छूछक आदि के खर्च से डरकर गर्भ में मारा जाता है, अन्यथा अपनी बेटी मारकर कोई खुश नहीं है। इस प्रकार की सर्व सामाजिक कुरीतियों को तर्क देकर सत्संग के माध्यम से संत रामपाल दास जी महाराज ने हमारे दिल धोए हैं। अब 90 लाख व्यक्तियों ने इनके इस मिशन को स्वीकारा है। उसी तरह विवाह किए जाते हैं। लगभग 30 हजार विवाह इस रीति से किए हैं। सर्व सुख से बस रहे हैं। आपसी प्रेम भी अधिक रहता है। रिश्ते-नातों में दरार नहीं पड़ती।

❖ सर्व नशा छुड़वाया जाता है। दीक्षा उसको दी जाती है जो मिशन की सर्व शर्तें मानने को तैयार होता है।

❖ व्याभिचार, रिश्वत, चोरी, मिलावट आदि तो हमारे भक्त भाई-बहनों में दूर की कौड़ी है। कोई निकट भी नहीं जाता। इन्हीं कारणों से व ज्ञान को समझकर नवंबर 2014 के बाद भी तीन लाख श्रद्धालुओं ने नाम दीक्षा लेकर हमारे मिशन से जुड़े हैं।

❖ आपकी सरकार इस पुण्य और समाज सुधार के कार्य में बेवजह बाधा करके पाप की भागीदार बन रही है।

❖ हम आपसे निवेदन ही कर सकते हैं तथा संत रामपाल जी महाराज द्वारा बताए अध्यात्म ज्ञान से सतर्क कर सकते हैं। मानें या न मानें यह आप पर निर्भर करता है।

❖ सूक्ष्मवेद में कहा है कि राजा समझाना और सिंह को रिझाना खतरे से खाली नहीं है। बताया है कि राजा और शराबी पर कोई शिक्षा कार्य नहीं करती क्योंकि दोनों को नशा होता है।

उदाहरण :- एक पचहत्तर (75) वर्ष का वद्ध शराब के नशे में खेत के रास्ते में खड़ा-खड़ा हिल रहा था। उसके हाथ का सहारा डोगा (छड़ी) जमीन पर गिर गई थी। वह उठा नहीं पा रहा था। उसे गिरने का भय था। उस रास्ते पर एक राहगीर आया। उससे वद्ध ने कहा कि मेरा डोगा पकड़ा दे। राहगीर को समझते

देर नहीं लगी कि बुजुर्ग शराब पीये हुए है। राहगीर ने कहा कि हे वरिष्ठ नागरिक, हे बुजुर्ग! आपकी आयु देखो, यह आयु क्या शराब पीने की है। यह तो जवान को भी नष्ट कर देती है। इज्जत तथा धन दोनों का नाश करती है। आपके बच्चों-पोतों पर क्या प्रभाव पड़ेगा? त्याग दो इसे।

वद्ध बोला :- शिक्षा बिना ना रह रहा, डोगा उठाना है तो उठा, नहीं तो चलता बन यानि वद्ध शराबी शराब के नशे में इतना डूबा था और इतनी आयु हो चुकी थी। उसका संकेत था कि तेरे जैसे शिक्षा देने वालों की कोई कमी नहीं है, पर मैं मानूं कोनी।

❖ यही दशा राजा तथा राज पद प्राप्त अधिकारी की होती है।

❖ कुछ दिनों के पश्चात् वह वद्ध एक सड़क के किनारे जा रहा था। नशा बराबर था। ठोकर लगी, पहले सड़क पर गिरा, फिर सिरासन करता हुआ सड़क किनारे गढ्ढ़े में गिर गया। देखने वालों ने दौड़कर उठाया। बाहर निकाला। होठ गुलगुला-से हो गये तथा गर्दन की नाड़ियाँ (जोते) टूट गई। एक महिना भुगतकर मरा। उस समय उसे अपनी गलती महसूस हुई। अन्य को भी कह रहा था कि कोई सुनता हो तो शराब के निकट ना जाना।

अक्ल तो आई पर जोते तुड़वाकर आई। यह तो पहले आनी चाहिए ताकि इज्जत से व निष्पाप जीवन जीकर पापों से बचता। भक्ति करता, धर्म-कर्म करके परमात्मा के दरबार में तथा संसार में मुख उज्जवल रहता।

❖ यही दशा राजा की होती है :-

उदाहरण :- सम्राट अशोक पहले बहुत पाप करता था। राज के विस्तार के लिए छोटे-छोटे राजाओं से युद्ध करके उनको मारकर अपने राज्य में मिलाता था। एक बार कलिंग में एक राजा से युद्ध हुआ। उसमें हजारों सैनिक मारे गए। उन लाशों को देखकर ऐसी ग्लानि हुई कि देवता बन गया। प्रतिज्ञा कर ली कि कुछ भी हो चाहे राज भी त्यागना पड़े, युद्ध नहीं करूँगा। उसके पश्चात् उस नेक राजा ने शांति स्तंभ जगह-जगह लगाए जिन पर तीन शेरों (Lions) के चित्र बनवाए गए। उन्हीं तीन सिंहों वाला चित्र भारत सरकार का सरकारी चिन्ह (राष्ट्रीय चिन्ह) है।

❖ श्री मनोहर लाल खट्टर जी जो हरियाणा के नरेश हैं, के शासनकाल में 31 जाट, 41 डेरा समर्थक सिरसा वाले तथा छः हमारे भक्त व बहन मारे गए। आप जी को यह त्रिसिंह चिन्ह की याद कब आएगी? हम याद दिलाना चाहते हैं। कानून व्यवस्था बनाने के लिए केवल जनरल डॉयर की तरह गोलियों से भूनना ही विकल्प नहीं है। उसने भी अपने अहंकार का प्रयोग करके जलियांवाला बाग में हजारों निहत्थे-बेकसूर लोग मारे थे। उसने कहा भी था कि मेरा काम हवाई फायर से भी चल सकता था, परंतु मैंने इनको मजा चखाना था। ये मेरे आदेश के पश्चात् भी सभा करने आए थे।

❖ कश्मीर में सरेआम उत्पात किया जा रहा है। वहाँ पर सैनिक भी शहीद हो रहे हैं, परंतु वहाँ गोलियाँ नहीं, पैलेट गन से जख्मी करने वाली गोलियों से कानून व्यवस्था कायम की जा रही है। यहाँ भी यही विकल्प चाहिए था। फिर भी शांति से कुछ भी किया जा सकता है। हम आशा करते हैं कि हमारे निवेदन को वद्ध वाला डोगा न बनाकर पुनः विचार करें, सरकार भगवान से डरे।

❖ यदि सरकार हमारे ऊपर अत्याचार, अन्याय के तहत झूठे मुकदमें बनवाकर लाठी चलवाकर यह मानती है कि संत रामपाल जी के मिशन को दबा देंगे तो बहुत बड़ी भूल है। यह एक सच्चाई का तूफान है। इस तूफान को रोकना किसी सरकार के बस की बात नहीं है। यह परमात्मा के द्वारा समय निर्धारित किया गया है कि यह मार्ग/पंथ पूरे विश्व में फैलेगा। इसे कोई नहीं रोक पाएगा।

संत रामपाल जी आपको तथा भारत की जनता को सच्चा भक्ति मार्ग बताना चाहते हैं तथा पाप के दण्ड से बचाना चाहते हैं।

❖ सतलोक आश्रम की अनुयाई पाँच बेटियों व एक मासूम बच्चे को मारकर सरकार का बेटी बचाओ वाला दावा भी खोखला सिद्ध हुआ।

❖ अन्य जानकारी जो संत रामपाल जी बताना चाहते थे :-

''अध्यात्म मार्ग को अपनाने का कारण''

❖ मेरे पूज्य गुरूदेव स्वामी रामदेवानंद जी जाति से ब्राह्मण थे और गाँव-बड़ा पैंतावास, तहसील व जिला-चरखी दादरी के मूल निवासी थे। उनका बचपन का नाम हरिद्वारी जी था। वे सोलह (16) वर्ष की आयु में परमात्मा प्राप्ति के लिए घर त्यागकर चले गए थे।

❖ जिस समय उनकी आयु लगभग 103 वर्ष थी, तब उनसे मेरा परिचय गाँव-छुड़ानी, जिला-झज्जर (हरियाणा) में संत गरीबदास जी के डेरे में हुआ। उनसे ज्ञान चर्चा हुई। उनका ज्ञान अन्य हिन्दू गुरूओं से बिल्कुल भिन्न था जो सहज में स्वीकार्य नहीं था।

★ स्वामी जी ने बताया कि सर्व हिन्दू गुरू अपने ही शास्त्रों के यथार्थ ज्ञान से परिचित नहीं हैं। प्रमाण बताऐः-

☛ ये हिन्दू धर्मगुरू बताते हैं कि श्री ब्रह्मा जी, श्री विष्णु जी (उर्फ श्री कष्ण उर्फ श्री राम जी), श्री शिव जी स्वयंभू हैं। इनके कोई माता-पिता नहीं हैं। ये अविनाशी हैं। इनका जन्म-मत्यु नहीं होता। विशेषकर श्री विष्णु जी तथा श्री शिव जी की तथा अन्य देवी-देवताओं की पूजा बताते हैं।

☛ श्री विष्णु जी से ऊपर कोई अन्य समर्थ परमात्मा नहीं मानते हैं।

❖ वास्तविकता इसके विपरित है। स्वामी जी ने मुझे पुराणों तथा गीता के अध्याय बताए। जो उन्होंने बताया, वह सत्य पाया। मेरा सिर चकरा गया। सत्य को आँखों देखकर भी विश्वास नहीं हो रहा था। स्वामी जी की आयु और भक्ति के तेज के सामने मैं कुछ उनके विपरीत बोल नहीं पाया। यदि वे ग्रन्थों के अध्याय-श्लोक-पष्ठ नहीं बताते तो मैं मुड़कर उनकी शक्ल भी नहीं देखता। सर्व ग्रन्थ खरीदे, उनको बार-बार पढ़ा जो उसी प्रकार पाया। मैंने स्वयं को गुरू जी को समर्पित कर दिया। इस मार्ग के प्रचार-प्रसार का उद्देश्य बनाया जिसका परिणाम मेरे सामने है। मैंने पुराणों में वही पाया जो गुरूदेव ने बताया था कि श्री देवी पुराण के तीसरे स्कंद में पष्ठ 123 पर उल्लेख इस प्रकार है :-

भगवान विष्णु ने देवी की स्तुति करते हुए कहा कि तुम शुद्ध स्वरूपा हो, यह सारा संसार तुम्ही से उद्भभाषित हो रहा है। मैं (विष्णु), ब्रह्मा और शंकर तुम्हारी कपा से विद्यमान हैं। हमारा अविर्भाव (जन्म) तथा तिरोभाव (मत्यु) हुआ करता है।

☛ तीसरे स्कंद में ही पष्ठ 119-120 पर लिखा है :- भगवान विष्णु जी ने श्री ब्रह्मा जी तथा श्री शिव जी से कहा कि इस देवी (अष्टांगी दुर्गा जी) को देखकर मुझे बाल्यकाल की याद आ गई। यह हम तीनों की माता है। यह जगत जननी है प्रकति देवी है। मैंने इस देवी को तब देखा था जब मैं छोटा बालक था। यह मुझे वट वक्ष पर लगे पालने में लोरी दे-देकर झुला रही थी।

☛ तीसरे स्कंद के ही पष्ठ 123 पर श्री देवीभागवत महापुराण में लिखा है :-

भगवान शंकर बोले! देवी यदि महाभाव विष्णु तुम्ही से प्रकट (उत्पन्न) हुए हैं तो उनके बाद उत्पन्न होने वाले ब्रह्मा भी तुम्हारे ही बालक हुए। फिर मैं तमोगुणी लीला करने वाला शंकर क्या तुम्हारी संतान नहीं हुआ अर्थात् मुझे भी उत्पन्न करने वाली तुम्ही हो।

☛ इन तीनों का पिता है। प्रमाण :- श्री शिव महापुराण संस्कत-हिन्दी अनुवाद सहित श्री खेमराज कष्ण दास प्रकाशन मुंबई में विद्यवेश्वर संहिता नामक खण्ड में पष्ठ 17, 18 पर तीनों देवताओं के पिता का वर्णन है :-

जिस समय श्री ब्रह्मा जी तथा विष्णु जी का प्रभुता के कारण युद्ध हुआ। उस युद्ध को बंद करवाने के लिए इनका पिता श्री शिव जी के रूप में प्रकट हुआ। उसके साथ उसकी पत्नी भी देवी पार्वती के रूप

में प्रकट हुई। इसको काल ब्रह्म, ज्योति निरंजन, क्षर पुरूष, सदाशिव, महाविष्णु, महाब्रह्मा आदि-आदि नामों से जाना जाता है। इसने श्री ब्रह्मा तथा विष्णु के मध्य में तेजोमय स्तंभ खड़ा किया। उनका युद्ध बंद हुआ। तब काल ब्रह्म ने श्री ब्रह्मा तथा श्री विष्णु से कहा कि पुत्रो! (ब्रह्मा और विष्णु) तुम प्रभु (ईश) नहीं हो। यह सब मेरा है। मैं इस ब्रह्माण्ड का स्वामी हूँ। तुमने अपने-अपने को ईश मानकर बहुत गलत किया। तुम्हारा भ्रम निवारण करने के लिए मैं इस वेश में प्रकट हुआ हूँ। हे पुत्रो! मैंने तुम दोनों (ब्रह्मा-विष्णु) को उत्पत्ति और पालन का कत तुम्हारे तप के प्रतिफल में दिया है। इसी प्रकार मेरे जैसे शक्ल वाले रूद्र तथा महेश को संहार (सामान्य प्राणियों को मारना) तथा तिरोभाव (मानव तथा देव व दानव को मारना) कत्य उनके तप के प्रतिफल में दिए हैं।

प्रमाण के लिए शिव पुराण के पष्ठों की फोटोकॉपी संलग्न है।

(**Annexure No. 1**)

विवेचन :- यह शिव पुराण लगभग 5525 वर्ष पुरानी है। इनमें लिखे वर्णन हमारे हिन्दू गुरू आज तक समझ नहीं सके। ये अज्ञानी हैं। यदि कोई अध्यापक यानि गुरू जी अपने पाठ्यक्रम के विपरित ज्ञान विद्यार्थियों को बता रहा है तो वह उनके साथ महाधोखा कर रहा है। उसे तुरंत प्रभाव से बरखास्त कर दिया जाता है। परंतु इन धोखेबाज गुरूओं को सरकार भी विशेष सम्मान दे रही है। इनके झूठे अध्यात्म ज्ञान के प्रचार में करोड़ों रूपये खर्च कर रही है।

❖ उदाहरण :- गीता जयंती समारोह आप (हरियाणा सरकार) द्वारा सन् 2015 से तो विशेष धूमधाम से मनाया जा रहा है। इसकी मैं प्रशंसा करता हूँ कि अपने अनमोल अमर ग्रन्थ श्रीमद्भगवत गीता का जितना सम्मान किया जाए, उतना ही कम है। परंतु मेरा विरोध इस बात पर है कि जिस महात्मा श्री ज्ञानानंद जी महाराज से प्रेरणा पाकर आप जी उनके शिष्य हुए। यदि आप शिष्य नहीं हैं तो उनके जबरदस्त फैन (प्रसंशक) अवश्य हैं क्योंकि आप जी यानि हरियाणा सरकार श्री ज्ञानानंद जी के मार्गदर्शन में कुरूक्षेत्र में गीता जयंती उत्सव धूमधाम से करोड़ों रूपये सरकारी कोष से खर्च करके मना रहे हैं। अच्छी बात है, परंतु जो बुरी (अनुत्तम) बात है, वह यह है कि हिन्दू धर्म के सर्व धर्मगुरू, प्रचारक, गीता मनीषी श्री ज्ञानानंद जी तथा सर्व शंकराचार्य हिन्दुओं के साथ बहुत बड़ा धोखा कर रहे हैं। आप तथा आपकी सरकार उसको गलती से बढ़ावा दे रहे हैं।

प्रमाण :- यदि कोई बर्तन विक्रेता चीनी मिट्टी के कप-प्लेट, कटोरियों, अमतबान आदि-आदि पर सुनहरा रंग करके सोने (Gold) के बर्तन बताकर स्वर्ण के भाव बेच रहा हो और सरकार भी बिना जाँच किए उसकी ब्रांड अम्बेस्डर बनकर प्रचार करे तो भोली जनता को ठगना उन ठगों के लिए निर्बाध बन जाता है। जनता को अविश्वास नहीं होता।

★ यही कार्य हरियाणा सरकार तथा श्री ज्ञानानंद जी महाराज जो गीता मनीषी (गीता का विद्वान) की पदवी प्राप्त करके कर रहे हैं।

कारण :- श्री स्वामी ज्ञानानंद जी को गीता शास्त्र का बिल्कुल ज्ञान नहीं है और न ही पुराणों का ज्ञान है। यदि ज्ञान होता तो श्री विष्णु जी (उन्हीं के स्वरूप कष्ण जी) को पूरे ब्रह्माण्ड का स्वामी (ईश) नहीं बताते।

सर्व हिन्दू धर्मगुरू तथा शंकराचार्य, आचार्य तथा अखाड़ों के महंत जी श्री विष्णु तथा श्री शंकर जी को अजर, अमर, अविनाशी बताकर सारे हिन्दू समाज को इन्हीं की पूजा करने की राय देते हैं। इसके प्रतिफल में मोटी रकम दक्षिणा रूप में लेते हैं तथा श्रीमद्भगवत गीता का गलत अनुवाद करके हिन्दू या गैर-हिन्दू समाज जो गीता का प्रेमी है, को बेचकर उनके साथ धोखा कर रहे हैं। श्री ब्रह्मा, श्री शंकर जी तथा श्री कष्ण जी (जो विष्णु जी ही हैं) जो स्वयं ही माता देवकी के गर्भ से जन्मा मानते हैं, को अविनाशी बताते

हैं कि श्री ब्रह्मा, विष्णु, शिव जी के कोई माता-पिता नहीं हैं। इनका जन्म-मरण नहीं होता। जबकि ऊपर शास्त्रों के प्रमाण लिखे हैं। उनसे स्पष्ट है कि ये नाशवान हैं। इनका जन्म-मत्यु होता है। इनकी माता देवी दुर्गा (अष्टांगी) है तथा पिता काल ब्रह्म (सदाशिव) है। ये तो वही धोखा हुआ जो मिट्टी के बर्तनों के ऊपर सुनहरी रंग करके स्वर्ण के बताकर ठग रहा है। आप जी की सरकार इन ठगों को विद्वान मानकर सहयोग करके पाप के भागी बन रहे हो।

❖ महामण्डलेश्वर गीता मनीषी श्री ज्ञानानंद जी महाराज सहित सर्व गुरूजन, प्रचारक कहते हैं कि श्री कष्ण उर्फ श्री विष्णु जी से समर्थ कोई परमात्मा नहीं है। श्री कष्ण अखिल ब्रह्माण्ड के स्वामी हैं। श्री विष्णु जी के अतिरिक्त कोई भगवान ही नहीं है।

❖ आप जी को गीता से ही सिद्ध करता हूँ कि श्री कष्ण जी उर्फ श्री विष्णु जी से ऊपर अन्य समर्थ परमेश्वर है। पूर्ण मोक्ष, परम शांति तथा सनातन परम धाम की प्राप्ति के लिए अन्य परम अक्षर ब्रह्म की शरण में जाने के लिए कहा है। ये धर्मगुरू कहते हैं कि श्री कष्ण जी ने गीता का ज्ञान अर्जुन पाण्डव को सुनाया।

☛ गीता ज्ञान दाता ने अपने से अन्य परमेश्वर बताया है। प्रमाण :- गीता अध्याय 18 श्लोक 61-62, 66 में। अध्याय 18 श्लोक 61 :- हे अर्जुन! शरीर रूप यंत्र में आरूढ़ हुए सम्पूर्ण प्राणियों को (ईश्वरः) परमेश्वर अपनी माया से उनके कर्मानुसार भ्रमण कराता हुआ सब प्राणियों के हृदय में स्थित है।

गीता अध्याय 18 श्लोक 62 :- हे भारत! तू सब प्रकार से उस परमेश्वर की शरण में जा। उस परमात्मा की कपा रूप प्रसाद से ही तू परम शांति को तथा सनातन परम धाम को प्राप्त होगा।

☛ गीता अध्याय 18 के ही श्लोक 66 में भी गीता ज्ञान कहने वाला अपने से अन्य (एकम्) अद्वितीय जिसके समान कोई और नहीं है। उस एक समर्थ परमात्मा की शरण में जाने के लिए कह रहा है। इस श्लोक में ''व्रज'' शब्द है जिसका अर्थ जाना है। परंतु गीता के गूढ़ रहस्य से अनभिज्ञ श्री ज्ञानानंद जी तथा अन्य सब अनुवादकर्ताओं ने ''व्रज''शब्द का अर्थ आना (आओ) किया जो अर्थ नहीं अनर्थ है। उदाहरण दें तो जैसे अंग्रेजी भाषा के शब्द ''GO'' का अर्थ जाना है। यदि किसी प्रकरण को ठीक से न समझकर ''Go'' शब्द का अर्थ आना किया है तो वह पूर्ण रूप से गलत है। यही दशा हमारे धर्मगुरूओं के द्वारा किए अनुवाद की है। आप जाँच करवाकर सच्चाई जान सकते हैं।

❖ कमाल की बात यह है कि एस्कोन मिशन के द्वारा अनुवादित गीता है जिसका अनुवाद ए.सी. भक्ति वेदान्त स्वामी द्वारा किया गया है तथा जिनका पूरा परिचय इस प्रकार है :- कष्ण कपा मूर्ति, श्री श्रीमद् ए. सी. भक्ति वेदान्त स्वामी प्रभुपाद, संस्थापकाचार्य :- अंतर्राष्ट्रीय कष्ण भावना अमत संघ। प्रकाशक हैं :- भक्ति वेदान्त बुक ट्रस्ट।

इनके द्वारा किए गए अनुवाद में विशेषता यह है कि इन्होंने शब्दों का अर्थ पहले अलग से किया है, फिर अनुवाद लिखा है। इन्होंने गीता अध्याय 18 श्लोक 66 के अनुवाद से पहले लिखे शब्दों में ''व्रज'' शब्द का अर्थ तो ठीक किया है ''जाओ''। आगे अनुवाद में किया है कि ''आओ'' जो कतई गलत है। वैसे ही जैसे अंग्रेजी भाषा का GO का अर्थ तो ठीक लिखा है ''जाओ'' और प्रकरण में कर दिया जाए ''आओ''। इस श्लोक का अनुवाद मेरे अतिरिक्त जिसने भी आज तक किया है, वह इस प्रकार है :- सम्पूर्ण धर्मों का परित्याग कर तू एक मेरी शरण में आजा या आओ। मैं तुझे सम्पूर्ण पापों से मुक्त कर दूँगा।

यथार्थ अनुवाद इस प्रकार है (गीता अध्याय 18 श्लोक 66) :- मेरे स्तर की धार्मिक पूजाओं के धर्मों को (माम्) मुझ में त्यागकर उस (एकम्) एक परमेश्वर जिसके समान कोई दूसरा नहीं है, की शरण में जाओ, मैं तुम्हें सर्व पापों से मुक्त कर दूँगा, तू शोक मत कर।

गीता अध्याय 18 श्लोक 61-62,66 की फोटोकॉपी संलग्न है।

(Annexure No. 2)

विवेचन :- गीता अध्याय 18 श्लोक 61 में कोई अन्य परमेश्वर गीता ज्ञान दाता ने स्वयं बताया है कि वह परमेश्वर सर्व प्राणियों को कर्मानुसार अन्य जीवों के शरीरों में भ्रमण कराता है। फिर गीता अध्याय 18 श्लोक 62 में उसी परमेश्वर की शरण में जाने को कहा है तथा उसी से परम शांति तथा सनातन परम धाम की प्राप्ति बताई है तो इस श्लोक 66 में जाने को आना अर्थ करके कौन-सी बुद्धिमता का प्रयोग अनुवादकों ने किया है। यह इनकी आध्यात्मिक अज्ञानता का प्रमाण है क्योंकि इन्होंने गलती से श्री विष्णु जी तथा उन्हीं के अवतार श्री कष्ण को अविनाशी-अजर-अमर सर्व समर्थ कुल का मालिक मान रखा है। इन अनुवादकों को संस्कत भाषा का तो ज्ञान है, परंतु आध्यात्मिक ज्ञान शून्य है। क्या इन्होंने निम्न श्लोक गीता में नहीं पढ़े?

❖ इनकी भाषा व ज्ञान के अनुसार गीता ज्ञान देने वाले श्री कष्ण जी गीता अध्याय 2 श्लोक 12, अध्याय 4 श्लोक 5, अध्याय 10 श्लोक 2 में स्वयं स्वीकार कर रहा है कि हे अर्जुन! तेरे और मेरे बहुत जन्म हो चुके हैं, आगे भी होते रहेंगे। जिनका तेरे को ज्ञान नहीं है। मुझे ज्ञान है।

❖ इन्होंने ही अनुवाद किया है। इनकी बुद्धि ने फिर कार्य नहीं किया कि ये श्री विष्णु जी (श्री कष्ण जी) को अविनाशी बता रहे हैं।

गीता अध्याय 2 श्लोक 12, अध्याय 4 श्लोक 5, अध्याय 10 श्लोक 2 की फोटोकॉपी संलग्न है। (Annexure No. 3)

❖ वह परमेश्वर जो गीता ज्ञान बोलने वाले से भिन्न है। उसके ढ़ेर सारे प्रमाण श्रीमद्भगवत गीता में बताता हूँ जो इन्हीं विद्वानों द्वारा अनुवाद किया गया है।

प्रमाण :- गीता अध्याय 7 श्लोक 29, अध्याय 8 श्लोक 3, 8, 9, 10 और इनके अतिरिक्त और भी अनेकों श्लोकों में भी अन्य समर्थ परमात्मा का वर्णन है जो गीता बोलने वाले से अन्य है।

यहाँ पर यह स्पष्ट करना अनिवार्य समझता हूँ कि गीता ज्ञान देने वाले ने गीता अध्याय 4 श्लोक 25 से 30 तक बताया है कि सब साधक अपनी-अपनी विधि से परमात्मा प्राप्ति की साधना करते हैं। उसे पाप नाश करने वाली जानते हैं।

☛ गीता अध्याय 4 श्लोक 32 :- इसमें कहा है कि यज्ञों यानि धार्मिक अनुष्ठानों यानि परमात्मा प्राप्ति का ज्ञान व विधान (ब्रह्मणः मुखे) सच्चिदानंद घन ब्रह्म यानि परमेश्वर द्वारा अपने मुख कमल से बोली वाणी में विस्तार से कहा है जो तत्वज्ञान है। उसको जानकर सर्व पापों से मुक्त हो जाएगा। वह साधना कर्म करते-करते यानि कर्म योग से करने की है। यानि घर त्यागकर कर्म सन्यासी होने की आवश्यकता नहीं है।

☛ गीता ज्ञान दाता ने गीता अध्याय 4 श्लोक 34 में स्पष्ट किया है कि उस तत्वज्ञान को जो परमेश्वर स्वयं अपने मुख से बोलकर वाणी में बताता है, मैं नहीं जानता। उस तत्वज्ञान को तू तत्वदर्शी संतों के पास जाकर समझ। उनको दण्डवत् प्रणाम करने से कपट छोड़कर प्रश्न करने से वे तत्वदर्शी ज्ञानी महात्मा तुझे उस ज्ञान का उपदेश करेंगे।

विचार करें :- यदि गीता बोलने वाले को वह ज्ञान होता तो एक अध्याय और बोल देते और कहते कि वहाँ पढ़ो। इससे सिद्ध है कि वह तत्वज्ञान गीता में नहीं है।

विशेष :- गीता अनुवादकों ने एक महान गलती गीता अध्याय 4 श्लोक 32 में भी कर रखी है जो इस प्रकार है :-

❖ गीता अध्याय 4 श्लोक 32 में ''ब्रह्मणः'' शब्द है जिसका अर्थ ब्रह्म से अन्य ब्रह्म यानि दूसरा समर्थ परमात्मा है। इन अनुवादकों ने ''ब्रह्मणः'' शब्द का अध्याय 17 श्लोक 23 में ठीक अर्थ किया है। ब्रह्मणः का अर्थ ''सच्चिदानंद घन ब्रह्म'' यानि समर्थ परमेश्वर है। इन्होंने तत्वज्ञान के अभाव के चलते गीता अध्याय 4 श्लोक 32 में ''ब्रह्मणः'' का अर्थ ''वेद'' किया है जो गलत है।

विवेचन :- वेद तो परमात्मा की जानकारी के ग्रन्थ हैं जो परमात्मा का विधान (संविधान) है। ''ब्रह्म''

परमात्मा है। उदाहरण के लिए जैसे एक राजा होता है। एक उसका विधान यानि संविधान होता है। किसी प्रकरण को ठीक से न समझकर राजा शब्द का अर्थ संविधान किया है तो वह अनुचित है। इसी प्रकार ''ब्रह्मणः'' का अर्थ एक जगह (गीता अध्याय 17 श्लोक 23) में ठीक ''सच्चिदानंद घन ब्रह्म'' करना, दूसरी जगह (अध्याय 4 श्लोक 32) में ''वेद'' करना इनके अध्यात्म ज्ञान के टोटे का प्रमाण है।

गीता अध्याय 4 श्लोक 32,34 तथा अध्याय 17 श्लोक 23 की फोटोकॉपी संलग्न है।

(Annexure No. 4)

उसी प्रसंग को आगे बढ़ाता हूँ कि गीता ज्ञान बोलने वाले से अन्य पूर्ण परमात्मा यानि परम अक्षर ब्रह्म है जो गीता ज्ञान दाता ही बता रहा है।

☛ गीता अध्याय 7 श्लोक 1-2 में कहा है कि हे पार्थ! अब तेरे को ऐसा ज्ञान सुनाने जा रहा हूँ जिसे जानकर फिर कुछ भी जानना शेष नहीं रह जाता।

☛ गीता अध्याय 7 श्लोक 12-15 तथा 20-23 में कहा है कि रजगुण ब्रह्मा, सतगुण विष्णु तथा तमगुण शिव की भक्ति करने वालों का ज्ञान हरा जा चुका है जो इन्हीं से मिलने वाले क्षणिक लाभ पर आश्रित है। वे राक्षस स्वभाव को धारण किए हुए मनुष्यों में नीच दूषित कर्म करने वाले मूर्ख मेरी भक्ति भी नहीं करते। श्लोक 12-15 में यह वर्णन है। फिर इसी अध्याय 7 के श्लोक 20-23 में स्पष्ट किया है कि जो अन्य देवताओं को मैंने कुछ अधिकार दिए हैं, उसके आधार से वे साधक को कुछ लाभ देते हैं। परंतु उन अज्ञानियों का वह देवताओं से प्राप्त लाभ फल नाशवान होता है। देवताओं को पूजने वाले देवताओं को प्राप्त होते हैं। मेरा भक्त मुझे प्राप्त होता है।

☛ गीता अध्याय 7 श्लोक 16-18 में अपनी साधना करके गति यानि मोक्ष प्राप्ति का ज्ञान दिया है कि मेरी भक्ति चार प्रकार के भक्त करते हैं :- आर्त, अर्थार्थी, जिज्ञासु तथा ज्ञानी। इनमें से ज्ञानी मुझे पसंद हैं।

गीता अध्याय 7 श्लोक 18 में गीता ज्ञान दाता ने अपनी गति यानि अपनी साधना से होने वाली मुक्ति अनुत्तम बताई है।

❖ सर्व अनुवादकर्ताओं ने इस श्लोक में भी वैसी ही गलती की है। ''अनुत्तम'' शब्द का अर्थ अति उत्तम, सर्वोच्च, सर्वश्रेष्ठ किया है। जैसे अंग्रेजी के शब्द ''Bad'' का अर्थ बुरा, अश्रेष्ठ, घटिया होता है। यदि ''Bad'' का अर्थ अच्छा या अति उत्तम किया है तो गलत है।

☛ गीता अध्याय 7 श्लोक 18 :- गीता ज्ञान दाता ने कहा है कि चारों में से जो ज्ञानी आत्मा हैं, वे मुझे प्रिय हैं। (क्योंकि ज्ञानी को पता चलता है कि एक परमात्मा की भक्ति से मोक्ष होगा। अन्य देवी-देवताओं की भक्ति करना व्यर्थ है।) परंतु उनको तत्वदर्शी संत न मिलने के कारण गीता ज्ञान दाता को समर्थ परमात्मा मानकर साधनाऐं की। उस परम अक्षर ब्रह्म का ज्ञान नहीं हुआ। जिस कारण से गीता ज्ञान दाता ने इस गीता अध्याय 7 श्लोक 18 में कहा है कि :-

ये सब ज्ञानी आत्मा उदार यानि नेक हैं। यह मेरा मत है। वे साधनारत मेरी अनुत्तम यानि घटिया गति (मुक्ति) में स्थित हैं यानि इसी में संतुष्ट हैं।

★ कारण क्या है :- गीता अध्याय 18 श्लोक 62 में गीता ज्ञान दाता ने बताया है कि हे भारत! तू सब प्रकार से उस परमेश्वर की शरण में जा। उसकी कपा से ही तू परम शांति को तथा सनातन परम धाम को प्राप्त होगा।

☛ फिर गीता अध्याय 15 श्लोक 4 में गीता ज्ञान दाता ने कहा है कि तत्वज्ञान की प्राप्ति के पश्चात् परमेश्वर के उस परमपद की खोज करनी चाहिए जहाँ जाने के पश्चात् साधक लौटकर संसार में कभी नहीं आते। जिस परमेश्वर से संसार रूप वक्ष की प्रवति विस्तार को प्राप्त हुई है यानि जिसने सर्व ब्रह्माण्डों की रचना की है। उसी की भक्ति कर। उसी की शरण ग्रहण कर।

विशेष :- गीता ज्ञान देने वाले ने अपनी भक्ति का एक अक्षर ॐ (ओम्) गीता अध्याय 8 श्लोक 13

में बताया है।

☛ श्रीमद् देवीभागवत पुराण के सातवें स्कंद में पष्ठ 573-574 पर स्वयं देवी (दुर्गा जी) ने राजा हिमालय को ''ब्रह्म'' की भक्ति करने को कहा है कि उसकी भक्ति का ओम् (ॐ) नाम जाप करने का बताया है। इसके जाप से ब्रह्म लोक में आकाश में उसी ब्रह्म के पास चला जाएगा।

☛ गीता अध्याय 8 श्लोक 16 में स्पष्ट किया है कि ब्रह्मलोक तक जितने भी लोक हैं, उनमें गए साधक पुनरावर्ती में हैं यानि उनका जन्म-मरण सदा बना रहता है यानि गीता ज्ञान देने वाले की भक्ति से भी वह सनातन परम धाम प्राप्त नहीं हुआ। जहाँ जाने के पश्चात् साधक लौटकर संसार में नहीं आते। इसलिए गीता ज्ञान देने वाले ने अपनी साधना यानि ओम् (ॐ) नाम के स्मरण से होने वाली परमगति ब्रह्मलोक प्राप्ति को (अनुतमाम् गतिम्) घटिया मुक्ति कहा है।

इसीलिए तो गीता अध्याय 18 श्लोक 62 में अपने से अन्य परमेश्वर की शरण में जाने को कहा है।

❖ प्रसंग चल रहा है कि गीता ज्ञान दाता से अन्य परमात्मा का गीता में प्रमाण है :-

❖ गीता अध्याय 7 श्लोक 29 में गीता ज्ञान दाता ने कहा कि जो मेरे आश्रित होकर यानि मेरी बातों पर ध्यान देकर तत्वदर्शी संत को खोज लेते हैं, जो केवल जरा यानि वद्धावस्था तथा मरण से छुटकारा पाने यानि कभी लौटकर पथ्वी पर न आने के लिए साधना करके यत्न करते हैं। वे साधक (तत् ब्रह्म) उस परमेश्वर को तथा सर्व अध्यात्म को तथा सर्व कर्मों को जानते हैं। गीता अध्याय 7 में केवल 30 श्लोक हैं।

इसके पश्चात् आठवां अध्याय प्रारम्भ होता है। गीता अध्याय 8 श्लोक 1 में अर्जुन ने प्रश्न किया कि वह तत् ब्रह्म क्या है? इसका उत्तर गीता ज्ञान देने वाले ने श्लोक 3 में दिया कि वह 'परम अक्षर ब्रह्म' है।

☛ गीता के इसी आठवें अध्याय के श्लोक 5 तथा 7 में तो अपनी भक्ति करने को कहा है जिससे गीता ज्ञान दाता को प्राप्त होगा। फिर गीता के इसी अध्याय 8 के श्लोक 8,9,10 में अपने से अन्य दिव्य परम पुरूष परमेश्वर की भक्ति करने को कहा है और स्पष्ट किया है कि उसकी भक्ति करने से उसी को प्राप्त होगा।

उपरोक्त प्रमाणों से स्पष्ट हुआ कि महामण्डलेश्वर गीता मनीषी तथा शंकराचार्य की पदवी प्राप्त महान आत्माओं को गीता, पुराणों तथा वेदों का क-ख का भी ज्ञान नहीं है।

गीता अध्याय 7 श्लोक 1-2, 12-18, 20-23, 29, अध्याय 8 श्लोक 1, 3, 5, 7-10, 16 तथा अध्याय 15 श्लोक 4 तथा देवीभागवत के पष्ठ 573-574 की फोटोकॉपी संलग्न है।

(Annexure No. 5)

❖ माननीय मुख्यमंत्री जी व हरियाणा सरकार को यह आठवें अजूबे (आश्चर्य) का ज्ञान यह दास (रामपाल दास) केन्द्रीय जेल नं. 2 हिसार से करवा रहा है जो हिन्दुओं के हित में तो होगा ही, पूरे विश्व का मानव इसको सुन-पढ़कर कतार्थ हो जाएगा।

❖ एक अन्य गूढ़ रहस्य जो बताने जा रहा हूँ, वह इतना सत्य है जितना आज से लगभग 525 वर्ष पूर्व फ्रांस देश के वैज्ञानिक निकोडिन कोपरनिकस ने जनता से कहा था कि पथ्वी अपने अक्ष (धुरी) पर घूमती है। जिस कारण से दिन-रात बनते हैं। जबकि उस समय पूरे विश्व में यह माना जाता था कि सूर्य पथ्वी के चारों और घूमता है। जिस कारण से दिन-रात बनते हैं। उस समय यह कहना कि पथ्वी घूमती है, जिससे दिन-रात बनते हैं तो मूर्ख कहलाना था। उस समय फ्रांस देश के धार्मिक नेताओं ने इस बात को धर्म के विरूद्ध बताकर हंगामा खड़ा कर दिया था। जिस कारण उस सच्चे पुरूष को फांसी पर लटकाया गया था। अब उसकी मत्यु के चार सौ वर्ष पश्चात् उस सच्चे पुरूष की दिवांगत आत्मा से पूरे विश्व ने क्षमा याचना की है। ऐसा ही आविष्कार अपने ही सद्ग्रन्थों से मैंने किया है जो इतना ही कटु सत्य है। यदि वर्तमान में देश की जनता शिक्षित नहीं होती तो निकोडीन कोपरनिकस वाली दशा मेरी हो चुकी होती। मेरे द्वारा बताए ज्ञान की पुस्तकों तथा सत्संगों की DVD को देख, सुन, पढ़कर बाद में पश्चाताप करते। मेरी तमन्ना है कि

मैं प्रथम तो अपने हिन्दू भाई-बहनों को परमात्मा की शास्त्रोक्त सच्ची राह दिखाऊँ जिससे अपने देश की जनता सत्य साधना करके सुख, सिद्धि तथा परम गति को प्राप्त हो जाए।

गीता अध्याय 16 श्लोक 23-24 में कहा है कि :-

☛ गीता अध्याय 16 श्लोक 23 :- जो साधक शास्त्रविधि को त्यागकर अपनी इच्छा से मनमाना आचरण यानि शास्त्रों में वर्णित भक्ति विधि को छोड़कर मनमानी साधना करता है। उसको न तो सुख प्राप्त होता है, न सिद्धि यानि भक्ति की शक्ति प्राप्त होती है, न ही उसकी गति यानि मुक्ति होती है।

(इन्हीं तीन लाभों के लिए साधक साधना करता है।)

☛ गीता अध्याय 16 श्लोक 24 :- इससे तेरे लिए कर्तव्य यानि जो साधना करनी चाहिए तथा अकर्तव्य यानि जो साधना नहीं करनी चाहिए, उस व्यवस्था में शास्त्र ही प्रमाण हैं। ऐसा जानकर तू शास्त्र विधि से नियत कर्म ही करने योग्य हैं।

हमारे हिन्दू धर्मगुरूओं द्वारा बताई भक्ति विधि शास्त्रों में वर्णित नहीं है क्योंकि इनको शास्त्रों का ज्ञान ही नहीं है। जिस कारण से भारतवर्ष की जनता को कोई आध्यात्मिक लाभ नहीं हो रहा। परमात्मा की शास्त्रोक्त साधना से सुख होता है यानि घर-परिवार में सुख-शांति, कारोबार में लाभ, अवांछित घटनाऐं नहीं होती। संकट निवारण तथा मोक्ष प्राप्ति भी होती है। मोक्ष के लिए सहयोगी आध्यात्मिक शक्ति (सिद्धि) भी प्राप्त होती है।

गीता अध्याय 16 श्लोक 23-24 की फोटोकॉपी संलग्न है।

(**Annexure No. 6**)

★ जब व्यक्ति की आवश्यकताऐं परमात्मा पूरी कर देता है तो वह न मिलावट करता है, न चोरी, न रिश्वतखोरी, न छल-कपट करके ठगी करता है।

तत्वदर्शी संत से तत्वज्ञान सुनने से अनुयाई को सम्पूर्ण कर्मों का ज्ञान हो जाता है। जिस कारण से वह कोई ऐसा कार्य नहीं करता जिससे पाप लगे और परमात्मा रूष्ट हो जाए। परमात्मा रूष्ट होने से आध्यात्मिक सुविधाऐं बंद हो जाती है। घर में दुर्घटना घट जाती है। जिस डर से साधक कोई बुराई नहीं करता। यदि पूरे भारत के नागरिक इस तत्वज्ञान को समझ लेंगे और मेरे द्वारा बताए शास्त्रविधि अनुसार भक्ति करेंगे तो सर्व सुखी हो जाऐंगे। कोई चोरी, जारी (व्याभिचार), मिलावट, रिश्वत लेना, डाके, रेप आदि-आदि अपराध नहीं करेंगे। सामाजिक कुरीतियाँ, दहेज लेना-देना बंद कर देंगे। अन्य बुराई नशा आदि त्याग देंगे जैसा कि मेरे अनुयाई कर रहे हैं।

❖ विशेष निवेदन :-

मैं चाहता हूँ कि आप (हरियाणा सरकार) मेरे द्वारा बताए ज्ञान की निष्पक्ष जाँच करें। फिर सर्व हिन्दू धर्मगुरूओं को एक मंच पर बैठाऐं जिसमें मेरी भागीदारी भी हो। किसी राष्ट्रीय T.V. चैनल विज्ञापन देकर ज्ञान चर्चा लाईव कराई जाए ताकि भारत की जनता सत्य-असत्य का स्वयं निर्णय करे। मैं अपनी महिमा नहीं चाहता। मेरा उद्देश्य है कि हम सब गुरूजन इकट्ठे बैठकर एक शास्त्रोक्त ज्ञान तथा भक्ति विधि बताऐं जिससे साधकों का कल्याण हो सके। देश से सर्व बुराई समाप्त होकर देश में शांति स्थापित हो। इसके लिए हिन्दू गुरूजनों को अपनी फोकट महिमा का बलिदान देश की जनता के हित में देना पड़ेगा। पहले मुझ दास के ज्ञान को वे स्वयं सुनें और कोई त्रुटि मेरे से हुई है तो मैं सरेआम चैनल पर स्वीकार करूँगा या प्रमाणों द्वारा सत्य सिद्ध करूँगा। जो आपसे हुई, उसे आप मानें, यह संत का गुण है।

❖ अन्य विशेष जानकारी :-

मुझे मेरे अनुयाई ने एक डॉ. जाकिर नाईक ईस्लाम धर्म के प्रचारक की विडियो DVD's लाकर दी। मैंने उनको देखा। डॉ. जाकिर नाईक ने कहा कि मैंने चालीस हजार हिन्दुओं को उन्हीं के शास्त्रों से तर्क देकर इस्लाम धर्म को हिन्दू धर्म से उत्तम सिद्ध करके मुसलमान बना दिया।

☛ डॉ. जाकिर नाईक ने यह भी कहा है कि ''मैं सर्व हिन्दू धर्म के आचार्यों, शंकराचार्यों, धर्मगुरूओं, मण्डलेश्वरों को चैलेंज करता हूँ कि मेरे साथ अध्यात्म पर डीबेट (गोष्टी) करें, परंतु किसी ने स्वीकार नहीं किया।''

☛ मैंने (रामपाल दास ने) उसका चैलेंज स्वीकार किया तथा आध्यात्मिक ज्ञान चर्चा का दिन निश्चित करके प्रसिद्ध टी.वी. चैनलों पर Ad (विज्ञापन) की। परंतु डॉ. जाकिर नाईक नहीं आया। चैनल बुक करवाया गया था। परंतु निश्चित दिन को साधना धार्मिक चैनल पर लगातार तीन दिन तीन-तीन घण्टे का प्रवचन मैंने इस्लाम धर्म के ग्रन्थों को आधार मानकर किया। डॉ. जाकिर नाईक को उन्हीं की धार्मिक पुस्तक ''कुर्रान शरीफ'' तथा हजरत मुहम्मद जी की जीवनी से फेल कर दिया। जैसे हिन्दू धर्मगुरूओं को अपने ही सद्ग्रन्थों (गीता, वेद, पुराणों) के आधार से फेल कर रखा है।

☛ मुसलमान मानते हैं कि गीता अध्याय 2 श्लोक 22 में कहा है कि प्रत्येक प्राणी का जन्म हुआ। उसकी मत्यु तथा फिर जन्म होता है। जैसे मानव पुराने वस्त्र जो जीर्ण हो जाते हैं, वे त्यागकर नए वस्त्र धारण करता है। जैसे एक कीड़ा अपने अगले पैरों को अन्य टहनी पर रखकर पिछली टहनी से पिछले पैर उठाता है, यह गलत है।

मैंने सिद्ध किया कि यह सत्य है। आपकी कुर्रान तथा हजरत मुहम्मद जी की जीवनी में लिखा है।

इस प्रकार आपको इस पत्र तथा इस ज्ञान के अनुसार यह भी आभास हो गया होगा कि संत रामपाल जी महाराज सिर्फ आध्यात्मिक गुरू हैं, अध्यात्म के अतिरिक्त इनका राजनीति से कोई लेना-देना नहीं है। ये सारा समय अध्यात्म के साथ-साथ सामाजिक कुरीतियों के सुधार के लिए कार्य कर रहे हैं तथा उनका उद्देश्य सद्भक्ति देकर मानव समाज को सुखी बनाकर मोक्ष प्राप्त करवाना है।

अतः आपको अब भी एक अवसर प्राप्त हुआ है कि झूठ तथा सत्य का निर्णय करके, सत्य का सहयोग करें जिससे आपके अपने तथा जनता के शुभ कर्म बनकर जीवन सफल हो।

प्रार्थीगण

1. गिरीश कुमार
   G-402, गली नं. 20, पश्चिम करावल नगर, दिल्ली-110094
   सम्पर्क सूत्र :- 09910159099
2. नितिन कुमार
   जालंधरी सराय, नजदीक अशोक नगर कोर्ट रोड़ बदायूँ (उत्तर प्रदेश)
   सम्पर्क सूत्र :- 7206027603
3. प्रकाश दास
   कालूराम जी की बावड़ी, सूरासागर, जोधपुर (राजस्थान)
   सम्पर्क सूत्र :- 9950855546
4. संत रामपाल जी महाराज के समस्त अनुयाई।

नोट :- संत रामपाल दास जी द्वारा लिखी यथार्थ भावार्थ वाली पवित्र पुस्तक ''गीता तेरा ज्ञान अमत'' निःशुल्क मँगवाने के लिए निम्न नम्बरों पर अपना पूरा नाम, पता हमें SMS करें :-

Ph . 9555000801, 9555000808

Annexure No. 1

(शिव पुराण के पष्ठों की फोटोकॉपी)

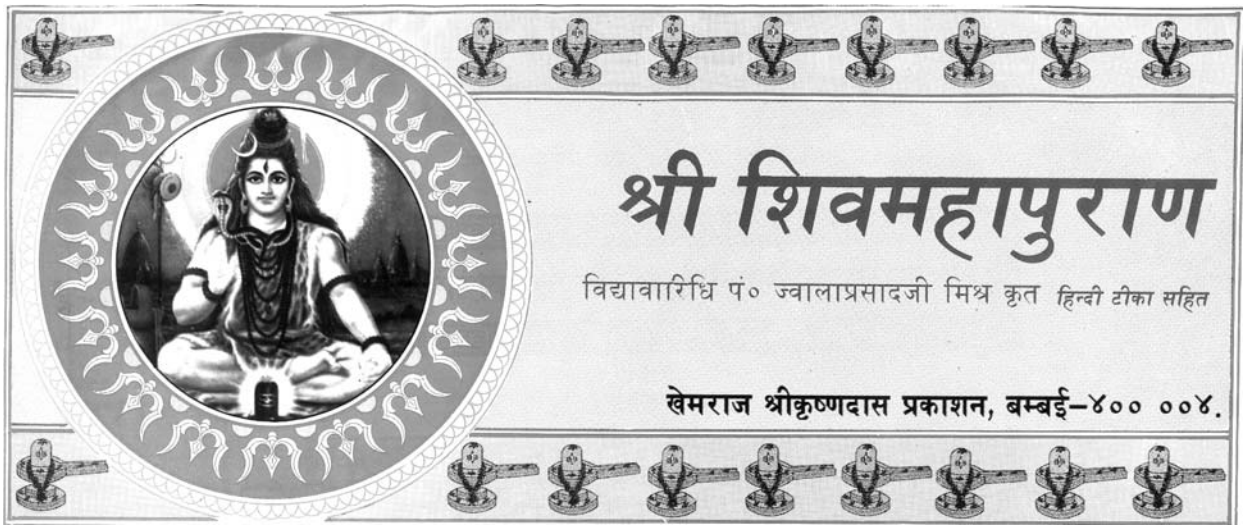

शि०पु० ॥१७॥

भोगावहमिदंलिंगंभुक्तिंमुक्त्येकसाधनम् ॥ दर्शनस्पर्शनध्यानाज्जंतूनांजन्ममोचनम् ॥२०॥ अनलाचलसंकाशंयदिदंलिंगमुत्थितम् ॥ अरुणाचलमित्येवतदिदंख्यातिमेष्यति ॥२१॥ अत्रतीर्थचबहुधाभविष्यतिमहत्तरम्॥ मुक्तिरप्यत्रजंतूनःवासेनमरणेनच ॥२२॥रथोत्सवादिकल्याणंजनावासंतुसर्वतः॥अत्रदत्तंहुतंजप्तंसर्वंकोटिगुणंभवेत्॥२३॥मत्क्षेत्रादपिसर्वस्मात्क्षेत्रमेतन्महत्तरम्॥ अत्रसंस्मृतिमात्रेणमुक्तिभर्वतिदेहिनाम्॥२४॥तस्मान्महत्तरमिदंक्षेत्रमत्यंतशोभनम्॥सर्वकल्याणसंपूर्णंसर्वमुक्तिकरंशुभम्॥२५॥ अर्चयित्वाऽत्रमामेवलिंगेलिंगिनमीश्वरम्॥सालोक्यंचैवसामीप्यंसारूप्यंसार्ष्टिरेवच ॥२६॥ सायुज्यमितिपंचैतेक्रियादीनांफलं मतम् ॥ सर्वेपियूयंसकलंप्राप्स्यथाशुमनोरथम् ॥२७॥नंदिकेश्वरउवाच ॥ इत्यनुगृह्यभगवान्विनीतौविधिमाधवौ॥ यत्पूर्वंप्रहतं युद्धेतयोःसैन्यंपरस्परम् ॥२८॥ तदुत्थापयदत्यर्थंस्वशक्त्याऽमृतधारया ॥ तयोमाढ्यंचवैरंचव्यपनेतुमुवाचतौ ॥ २९ ॥

वि०सं०१ अ० ९

प्रकार मुक्तिदायक होगा ॥२५॥ जो यहां लिंगमें मुझ लिंगेश्वरकी पूजा करेंगे उन्हें सालोक्य सामीप्य सारूप्य सार्ष्टि ॥ २६ ॥ सायुज्य यह पांचों मुक्ति क्रियाके फलको प्राप्त होजाँयगी और यहां पूजन करनेसे तुमभी सब मनोरथोंको प्राप्त होंगे ॥२७॥ नंदिकेश्वर बोले इस प्रकार भगवानने उन नम्र हुए ब्रह्मा और विष्णुपर अनुग्रह करके उनके युद्धमें जो परस्पर उनकी सेना मारी गईथी॥२८॥ उस सबको अपनी शक्तिसे जिवाकर उठाया जिस शक्तिमें अमृतकी धारा रहती है और उन दोनोंकी अज्ञानता और वैरको दूर करनेके अर्थ दोनोंसे कहा ॥ २९ ॥

मेरे सकल और निष्कल भेदसे दोस्वरूप हैं परन्तु और ईश्वर नहीं इस कारण उनके दो रूप नहीं हो सकते ॥३०॥ पहला स्तम्भरूप और पीछे मूर्तिमान् रूप धारण किया इसमें ब्रह्मरूप निष्फल है और ईशरूप सगुण है ॥ ३१ ॥ मेरे यह दोनों रूप सिद्ध हैं दूसरे किसीके नहीं हो सकते. इस कारण तुम दोनोंको अथवा दूसरोंको ईश्वरत्वकी प्राप्ति नहीं हो सकती॥३२॥तुमने जो अज्ञानसे अपनेको ईश माना यह बडा अद्भुत हुआ उसके दूर करनेकोही मैं रणस्थानमें आया ॥ ३३ ॥ अब तुम अपना अभिमान त्यागकर मुझ ईश्वरमें अपनी बुद्धि लगाओ मेरे प्रसादसे लोकमें सब अर्थ प्रकाश करते हैं ॥ ३४ ॥ मुझ गुरुके वचनही तुमको वारंवार प्रमाण हैं, तुम्हारी प्रीतिसेही यह गूढ ब्रह्मत्व मैं तुमसे

शि०पु० ॥१८॥

पंचकृत्यमिदंवोढुंमप्रास्तिमुखपंचकम् ॥ चतुर्दिक्षुचतुर्वक्त्रंतन्मध्येपंचमंमुखम् ॥९॥ युवाभ्यांतपसालब्धमेतत्कृत्यद्वयंसुतौ ॥ सृष्टिस्थित्यमिधंभाग्यंमत्तःप्रीतादतिप्रियम्॥ १० ॥ तथारुद्रमहेशाभ्यामन्यत्कृत्यद्वयंपरम् ॥ अनुग्रहाख्यंकेनापिलब्धुंनैवहि शक्यते ॥ ११ ॥ तत्सर्वंपौर्विकंकर्मयुवाभ्यांकालविस्मृतम् ॥ नतद्रुद्रमहेशाभ्यांविस्मृतंकर्मतादृशम् ॥ १२ ॥

वि०सं०१ अ० १०

प्राचीन कवियोंको जानना चाहिये ॥ ८ ॥ इसी पांच कृत्यके धारण करनेको मेरे पांच मुख हैं चार दिशाओंमें चार मध्यमें और पांचवाँ मुख है ॥ ९ ॥ हे पुत्रो ! यह कृत्य आपने तपसे प्राप्त किया है जोकि सृष्टिकी उत्पत्ति और पालन कहाता है सो मैंने प्रसन्न होकर तुम्हें दिया है ॥१०॥ इसी प्रकारसे दूसरे दो कृत्य रुद्र और महेशको प्रदान किये हैं परन्तु अनुग्रह कृत्य कोई भी पानेको समर्थ नहीं है ॥११॥ सो पूर्वके कर्म्म तुमने समयसे बिसार दिये रुद्र और महेशने उनको नहीं भुलाया है ॥ १२ ॥

Annexure No. 2 (गीता के अध्याय 18 के श्लोकों की फोटोकॉपी)

॥ श्रीहरिः ॥ 17

श्रीमद्भगवद्गीता

पदच्छेद, अन्वय
साधारण भाषाटीकासहित

जयदयाल गोयन्दका

ईश्वरः, सर्वभूतानाम्, हृद्देशे, अर्जुन, तिष्ठति,
भ्रामयन्, सर्वभूतानि, यन्त्रारूढानि, मायया ॥ ६१ ॥

क्योंकि—

अर्जुन	= हे अर्जुन!		(उनके कर्मोंके अनुसार)
यन्त्रारूढानि	= शरीररूप यन्त्रमें आरूढ़ हुए	**भ्रामयन्**	= भ्रमण कराता हुआ
सर्वभूतानि	= सम्पूर्ण प्राणियोंको	**सर्वभूतानाम्**	= सब प्राणियोंके
ईश्वरः	= अन्तर्यामी परमेश्वर	**हृद्देशे**	= हृदयमें
मायया	= अपनी मायासे	**तिष्ठति**	= स्थित है।

तम्, एव, शरणम्, गच्छ, सर्वभावेन, भारत,
तत्प्रसादात्, पराम्, शान्तिम्, स्थानम्, प्राप्स्यसि, शाश्वतम् ॥ ६२ ॥

इसलिये—

भारत	= हे भारत! (तू)	**तत्प्रसादात्**	= उस परमात्माकी कृपासे (ही तू)
सर्वभावेन	= सब प्रकारसे		
तम्	= उस परमेश्वरकी	**पराम्**	= परम
एव	= ही	**शान्तिम्**	= शान्तिको (तथा)
		शाश्वतम्	= सनातन
शरणम्	= शरणमें*	**स्थानम्**	= परम धामको
गच्छ	= जा।	**प्राप्स्यसि**	= प्राप्त होगा।

सर्वधर्मान्, परित्यज्य, माम्, एकम्, शरणम्, व्रज,
अहम्, त्वा, सर्वपापेभ्यः, मोक्षयिष्यामि, मा, शुचः ॥ ६६ ॥

इसलिये—

सर्वधर्मान्	= सम्पूर्ण धर्मोंको अर्थात् सम्पूर्ण कर्तव्यकर्मोंको (मुझमें)	**शरणम्**	= शरणमें[१]
		व्रज	= आ जा।
		अहम्	= मैं
परित्यज्य	= त्यागकर (तू केवल)	**त्वा**	= तुझे
एकम्	= एक	**सर्वपापेभ्यः**	= सम्पूर्ण पापोंसे
माम्	= मुझ सर्वशक्तिमान् सर्वाधार परमेश्वरकी ही	**मोक्षयिष्यामि**	= मुक्त कर दूँगा, (तू)
		मा, शुचः	= शोक मत कर।

Annexure No. 3

(गीता अध्याय 2 के श्लोक 12 की फोटोकॉपी)

न, तु, एव, अहम्, जातु, न, आसम्, न, त्वम्, न, इमे, जनाधिपाः,
न, च, एव, न, भविष्यामः, सर्वे, वयम्, अतः, परम्॥ १२॥

न	= न	**न**	= नहीं
तु	= तो	**(आसन्)**	= थे
(एवम्)	= ऐसा	**च**	= और
एव	= ही (है कि)	**न**	= न
अहम्	= मैं	**(एवम्)**	= ऐसा
जातु	= किसी कालमें	**एव**	ही (है कि)
न	= नहीं	**अतः**	= इससे
आसम्	= था (अथवा)	**परम्**	= आगे
त्वम्	= तू	**वयम्**	= हम
न	= नहीं	**सर्वे**	= सब
(आसीः)	= था (अथवा)	**न**	= नहीं
इमे	= ये	**भविष्यामः**	= रहेंगे।
जनाधिपाः	= राजालोग		

(गीता अध्याय 4 के श्लोक 5 की फोटोकॉपी)

बहूनि, मे, व्यतीतानि, जन्मानि, तव, च, अर्जुन,
तानि, अहम्, वेद, सर्वाणि, न, त्वम्, वेत्थ, परन्तप॥ ५॥

इसपर श्रीभगवान् बोले—

परन्तप	= हे परन्तप	**व्यतीतानि**	= हो चुके हैं।
अर्जुन	= अर्जुन!	**तानि**	= उन
मे	= मेरे	**सर्वाणि**	= सबको
च	= और	**त्वम्**	= तू
तव	= तेरे	**न**	= नहीं
बहूनि	= बहुत-से	**वेत्थ**	= जानता, (किंतु)
जन्मानि	= जन्म	**अहम्**	= मैं
		वेद	= जानता हूँ।

(गीता के अध्याय 10 के श्लोक 2 की फोटोकॉपी)

न, मे, विदुः, सुरगणाः, प्रभवम्, न, महर्षयः,
अहम्, आदिः, हि, देवानाम्, महर्षीणाम्, च, सर्वशः॥ २॥

हे अर्जुन!—

मे	= मेरी	**विदुः**	= जानते हैं;
प्रभवम्	= उत्पत्तिको अर्थात् लीलासे प्रकट होनेको	**हि**	= क्योंकि
		अहम्	= मैं
न	= न	**सर्वशः**	= सब प्रकारसे
सुरगणाः	= देवतालोग (जानते हैं और)	**देवानाम्**	= देवताओंका
		च	= और
न	= न	**महर्षीणाम्**	= महर्षियोंका (भी)
महर्षयः	= महर्षिजन (ही)	**आदिः**	= आदि कारण हूँ।

Annexure No. 4

(गीता अध्याय 4 श्लोक 32 की फोटोकॉपी)

एवम्, बहुविधाः, यज्ञाः, विततताः, ब्रह्मणः, मुखे,
कर्मजान्, विद्धि, तान्, सर्वान्, एवम्, ज्ञात्वा, विमोक्ष्यसे॥ ३२॥

एवम्	= इस प्रकार (और भी)	**विद्धि**	= जान,
बहुविधाः	= बहुत तरहके		
यज्ञाः	= यज्ञ		
ब्रह्मणः	= वेदकी	**एवम्**	= इस प्रकार (तत्त्वसे)
मुखे	= वाणीमें		
विततताः	= विस्तारसे कहे गये हैं।		
तान्	= उन	**ज्ञात्वा**	= जानकर (उनके अनुष्ठान-द्वारा तू कर्मबन्धनसे सर्वथा)
सर्वान्	= सबको (तू)		
कर्मजान्	= मन, इन्द्रिय और शरीरकी क्रिया-द्वारा सम्पन्न होनेवाले	**विमोक्ष्यसे**	= मुक्त हो जायगा।

(गीता अध्याय 4 श्लोक 34 की फोटोकॉपी)

तत्, विद्धि, प्रणिपातेन, परिप्रश्नेन, सेवया,
उपदेक्ष्यन्ति, ते, ज्ञानम्, ज्ञानिनः, तत्त्वदर्शिनः॥ ३४॥

तत्	= उस ज्ञानको (तू तत्त्वदर्शी ज्ञानियोंके पास जाकर)	**परिप्रश्नेन**	= सरलतापूर्वक प्रश्न करनेसे
		ते	= वे
विद्धि	= समझ, (उनको)	**तत्त्वदर्शिनः**	= परमात्मतत्त्व-को भली-भाँति जाननेवाले
प्रणिपातेन	= भलीभाँति दण्डवत्-प्रणाम करनेसे, (उनकी)		
		ज्ञानिनः	= ज्ञानी महात्मा (तुझे उस)
सेवया	= सेवा करनेसे और कपट छोड़कर	**ज्ञानम्**	= तत्त्वज्ञानका
		उपदेक्ष्यन्ति	= उपदेश करेंगे—

(गीता के अध्याय 17 के श्लोक 23 की फोटोकॉपी)

ॐ, तत्, सत्, इति, निर्देशः, ब्रह्मणः, त्रिविधः, स्मृतः,
ब्राह्मणाः, तेन, वेदाः, च, यज्ञाः, च, विहिताः, पुरा॥ २३॥

और हे अर्जुन!—

ॐ	= ॐ,	**तेन**	= उसीसे
तत्	= तत्,	**पुरा**	= सृष्टिके आदिकालमें
सत्	= सत्—		
इति	= ऐसे (यह)	**ब्राह्मणाः**	= ब्राह्मण
त्रिविधः	= तीन प्रकारका	**च**	= और
ब्रह्मणः	= सच्चिदानन्दघन ब्रह्मका	**वेदाः**	= वेद
		च	= तथा
निर्देशः	= नाम	**यज्ञाः**	= यज्ञादि
स्मृतः	= कहा है;	**विहिताः**	= रचे गये।

Annexure No. 5

(गीता अध्याय 7 श्लोक 1 की फोटोकॉपी)

मयि, आसक्तमनाः, पार्थ, योगम्, युञ्जन्, मदाश्रयः,
असंशयम्, समग्रम्, माम्, यथा, ज्ञास्यसि, तत्, शृणु ॥ १ ॥

इसके पश्चात् श्रीकृष्णभगवान् बोले—

पार्थ	= हे पार्थ!	**समग्रम्**	= सम्पूर्ण विभूति, बल, ऐश्वर्यादि गुणोंसे युक्त, सबके आत्मरूप
मयि, आसक्तमनाः	= अनन्य प्रेमसे मुझमें आसक्तचित्त (तथा अनन्य भावसे)	**माम्**	= मुझको
मदाश्रयः	= मेरे परायण होकर	**असंशयम्**	= संशयरहित
योगम्	= योगमें	**ज्ञास्यसि**	= जानेगा,
युञ्जन्	= लगा हुआ (तू)	**तत्**	= उसको
यथा	= जिस प्रकारसे	**शृणु**	= सुन।

(गीता अध्याय 7 श्लोक 2 की फोटोकॉपी)

ज्ञानम्, ते, अहम्, सविज्ञानम्, इदम्, वक्ष्यामि, अशेषतः,
यत्, ज्ञात्वा, न, इह, भूयः, अन्यत्, ज्ञातव्यम्, अवशिष्यते ॥ २ ॥

अहम्	= मैं	**ज्ञात्वा**	= जानकर
ते	= तेरे लिये	**इह**	= संसारमें
इदम्	= इस	**भूयः**	= फिर
सविज्ञानम्	= विज्ञानसहित	**अन्यत्**	= और कुछ भी
ज्ञानम्	= तत्त्वज्ञानको	**ज्ञातव्यम्**	= जाननेयोग्य
अशेषतः	= सम्पूर्णतया		
वक्ष्यामि	= कहूँगा,	**न, अवशिष्यते**	= शेष नहीं रह जाता।
यत्	= जिसको		

(गीता अध्याय 7 श्लोक 12 की फोटोकॉपी)

ये, च, एव, सात्त्विकाः, भावाः, राजसाः, तामसाः, च, ये,
मत्तः, एव, इति, तान्, विद्धि, न, तु, अहम्, तेषु, ते, मयि ॥ १२ ॥

तथा—

च	= और	**तान्**	= उन सबको (तू)
एव	= भी		
ये	= जो	**मत्तः, एव**	= मुझसे ही (होनेवाले हैं)
सात्त्विकाः	= सत्त्वगुणसे उत्पन्न होनेवाले	**इति**	= ऐसा
भावाः	= भाव हैं (और)	**विद्धि**	= जान
ये	= जो	**तु**	= परंतु (वास्तवमें)[1]
राजसाः	= रजोगुणसे	**तेषु**	= उनमें
च	= तथा	**अहम्**	= मैं (और)
तामसाः	= तमोगुणसे होनेवाले भाव हैं,	**ते**	= वे
		मयि	= मुझमें
		न	= नहीं हैं।

(गीता अध्याय 7 श्लोक 13 की फोटोकॉपी)

त्रिभिः, गुणमयैः, भावैः, एभिः, सर्वम्, इदम्, जगत्,
मोहितम्, न, अभिजानाति, माम्, एभ्यः, परम्, अव्ययम् ॥ १३ ॥

किंतु—

गुणमयैः	= गुणोंके कार्यरूप सात्त्विक, राजस और तामस—	**मोहितम्**	= मोहित हो रहा है, (इसीलिये)
एभिः	= इन	**एभ्यः**	= इन तीनों गुणोंसे
त्रिभिः	= तीनों प्रकारके	**परम्**	= परे
भावैः	= भावोंसे[2]	**माम्**	= मुझ
इदम्	= यह	**अव्ययम्**	= अविनाशीको
सर्वम्	= सारा		
जगत्	= संसार—प्राणिसमुदाय	**न**	= नहीं
		अभिजानाति	= जानता।

(गीता अध्याय 7 श्लोक 14 की फोटोकॉपी)

दैवी, हि, एषा, गुणमयी, मम, माया, दुरत्यया,
माम्, एव, ये, प्रपद्यन्ते, मायाम्, एताम्, तरन्ति, ते ॥ १४ ॥

हि	= क्योंकि	**माम्**	= मुझको
एषा	= यह	**एव**	= ही (निरन्तर)
दैवी	= अलौकिक अर्थात् अति अद्भुत	**प्रपद्यन्ते**	= भजते हैं,
		ते	= वे
गुणमयी	= त्रिगुणमयी	**एताम्**	= इस
मम	= मेरी	**मायाम्**	= मायाको
माया	= माया		
दुरत्यया	= बड़ी दुस्तर है; (परंतु)	**तरन्ति**	= उल्लंघन कर जाते हैं अर्थात् संसारसे तर जाते हैं।
ये	= जो पुरुष (केवल)		

(गीता अध्याय 7 श्लोक 15 की फोटोकॉपी)

न, माम्, दुष्कृतिनः, मूढाः, प्रपद्यन्ते, नराधमाः,
मायया, अपहृतज्ञानाः, आसुरम्, भावम्, आश्रिताः ॥ १५ ॥

ऐसा सुगम उपाय होनेपर भी—

मायया	= मायाके द्वारा	**नराधमाः**	= मनुष्योंमें नीच,
अपहृतज्ञानाः	= जिनका ज्ञान हरा जा चुका है, (ऐसे)	**दुष्कृतिनः**	= दूषित कर्म करनेवाले
		मूढाः	= मूढ़लोग
आसुरम्, भावम्	= आसुर स्वभावको	**माम्**	= मुझको
		न	= नहीं
आश्रिताः	= धारण किये हुए,	**प्रपद्यन्ते**	= भजते

(गीता अध्याय 7 श्लोक 16 की फोटोकॉपी)

चतुर्विधाः, भजन्ते, माम्, जनाः, सुकृतिनः, अर्जुन,
आर्तः, जिज्ञासुः, अर्थार्थी, ज्ञानी, च, भरतर्षभ॥ १६ ॥

और—

भरतर्षभ अर्जुन	= हे भरतवंशियोंमें श्रेष्ठ अर्जुन!	च	= और
सुकृतिनः	= उत्तम कर्म करनेवाले	ज्ञानी	= ज्ञानी—(ऐसे)
अर्थार्थी	= अर्थार्थी,[1]	चतुर्विधाः	= चार प्रकारके
आर्तः	= आर्त,[2]	जनाः	= भक्तजन
जिज्ञासुः	= जिज्ञासु [3]	माम्	= मुझको
		भजन्ते	= भजते हैं।

(गीता अध्याय 7 श्लोक 17 की फोटोकॉपी)

तेषाम्, ज्ञानी, नित्ययुक्तः, एकभक्तिः, विशिष्यते,
प्रियः, हि, ज्ञानिनः, अत्यर्थम्, अहम्, सः, च, मम, प्रियः॥ १७॥

तेषाम्	= उनमें	ज्ञानिनः	= ज्ञानीको
नित्ययुक्तः	= नित्य मुझमें एकीभावसे स्थित	अहम्	= मैं
एकभक्तिः	= अनन्य प्रेमभक्तिवाला	अत्यर्थम्	= अत्यन्त
ज्ञानी	= ज्ञानी भक्त	प्रियः	= प्रिय हूँ
विशिष्यते	= अति उत्तम है;	च	= और
हि	= क्योंकि (मुझको तत्त्वसे जाननेवाले)	सः	= वह ज्ञानी
		मम	= मुझे (अत्यन्त)
		प्रियः	= प्रिय है।

(गीता अध्याय 7 श्लोक 18 की फोटोकॉपी)

उदाराः, सर्वे, एव, एते, ज्ञानी, तु, आत्मा, एव, मे, मतम्,
आस्थितः, सः, हि, युक्तात्मा, माम्, एव, अनुत्तमाम्, गतिम्॥ १८ ॥

यद्यपि—

एते	= ये	सः	= वह
सर्वे, एव	= सभी	युक्तात्मा	= मद्गत मनबुद्धिवाला (ज्ञानी भक्त)
उदाराः	= उदार हैं,	अनुत्तमाम्	= अति उत्तम
तु	= परंतु	गतिम्	= गतिस्वरूप
ज्ञानी	= ज्ञानी (तो साक्षात्)	माम्	= मुझमें
आत्मा	= मेरा स्वरूप	एव	= ही
एव	= ही है—(ऐसा)	आस्थितः	= अच्छी प्रकार स्थित है।
मे	= मेरा		
मतम्	= मत है;		
हि	= क्योंकि		

(गीता अध्याय 7 श्लोक 20 की फोटोकॉपी)

कामैः, तैः, तैः, हृतज्ञानाः, प्रपद्यन्ते, अन्यदेवताः,
तम्, तम्, नियमम्, आस्थाय, प्रकृत्या, नियताः, स्वया॥ २० ॥

और हे अर्जुन!—

तैः, तैः	= उन-उन	नियताः	= प्रेरित होकर
कामैः	= भोगोंकी कामनाद्वारा	तम्, तम्	= उस-उस
हृतज्ञानाः	= जिनका ज्ञान हरा जा चुका है, (वे लोग)	नियमम्	= नियमको
		आस्थाय	= धारण करके[2]
		अन्यदेवताः	= अन्य देवताओंको
स्वया	= अपने	प्रपद्यन्ते	= भजते हैं अर्थात् पूजते हैं।
प्रकृत्या	= स्वभावसे		

(गीता अध्याय 7 श्लोक 21 की फोटोकॉपी)

यः, यः, याम्, याम्, तनुम्, भक्तः, श्रद्धया, अर्चितुम्, इच्छति,
तस्य, तस्य, अचलाम्, श्रद्धाम्, ताम्, एव, विदधामि, अहम्॥ २१ ॥

यः, यः	= जो-जो	तस्य	= उस-
भक्तः	= सकाम भक्त	तस्य	= उस भक्तकी
याम्, याम्	= जिस-जिस	श्रद्धाम्	= श्रद्धाको
तनुम्	= देवताके स्वरूपको	अहम्	= मैं
श्रद्धया	= श्रद्धासे	ताम्, एव	= उसी देवताके प्रति
अर्चितुम्	= पूजना	अचलाम्	= स्थिर
इच्छति	= चाहता है;	विदधामि	= करता हूँ।

(गीता अध्याय 7 श्लोक 22 की फोटोकॉपी)

सः, तया, श्रद्धया, युक्तः, तस्य, आराधनम्, ईहते,
लभते, च, ततः, कामान्, मया, एव, विहितान्, हि, तान्॥ २२ ॥

तथा—

सः	= वह पुरुष	ततः	= उस देवतासे
तया	= उस	मया	= मेरे द्वारा
श्रद्धया	= श्रद्धासे	एव	= ही
युक्तः	= युक्त होकर	विहितान्	= विधान किये हुए
तस्य	= उस देवताका	तान्	= उन
आराधनम्	= पूजन	कामान्	= इच्छित भोगोंको
ईहते	= करता है	हि	= निःसन्देह
च	= और	लभते	= प्राप्त करता है।

(गीता अध्याय 7 श्लोक 23 की फोटोकॉपी)

अन्तवत्, तु, फलम्, तेषाम्, तत्, भवति, अल्पमेधसाम्,
देवान्, देवयजः, यान्ति, मद्भक्ताः, यान्ति, माम्, अपि॥ २३॥

तु	= परंतु	**देवान्**	= देवताओंको
तेषाम्	= उन	**यान्ति**	= प्राप्त होते हैं (और)
अल्पमेधसाम्	= अल्प बुद्धिवालोंका		
तत्	= वह	**मद्भक्ताः**	= मेरे भक्त (चाहे जैसे ही भजें, अन्तमें वे)
फलम्	= फल		
अन्तवत्	= नाशवान्		
भवति	= है (तथा वे)	**माम्**	= मुझको
देवयजः	= देवताओंको पूजनेवाले	**अपि**	= ही
		यान्ति	= प्राप्त होते हैं।

(गीता अध्याय 7 श्लोक 29 की फोटोकॉपी)

जरामरणमोक्षाय, माम्, आश्रित्य, यतन्ति, ये,
ते, ब्रह्म, तत्, विदुः, कृत्स्नम्, अध्यात्मम्, कर्म, च, अखिलम्॥ २९॥

और—

ये	= जो	**ब्रह्म**	= ब्रह्मको,
माम्	= मेरे	**कृत्स्नम्**	= सम्पूर्ण
आश्रित्य	= शरण होकर		
जरामरणमोक्षाय	= जरा और मरणसे छूटनेके लिये	**अध्यात्मम्**	= अध्यात्मको
		च	= तथा
यतन्ति	= यत्न करते हैं,	**अखिलम्**	= सम्पूर्ण
ते	= वे (पुरुष)	**कर्म**	= कर्मको
तत्	= उस	**विदुः**	= जानते हैं।

(गीता अध्याय 8 श्लोक 1 की फोटोकॉपी)

अर्जुन उवाच

किम्, तत्, ब्रह्म, किम्, अध्यात्मम्, किम्, कर्म, पुरुषोत्तम,
अधिभूतम्, च, किम्, प्रोक्तम्, अधिदैवम्, किम्, उच्यते॥ १॥

इस प्रकार भगवान्‌के वचनोंको न समझकर अर्जुन बोले—

पुरुषोत्तम	= हे पुरुषोत्तम!	**अधिभूतम्**	= अधिभूत (नामसे)
तत्	= वह		
ब्रह्म	= ब्रह्म	**किम्**	= क्या
किम्	= क्या है?	**प्रोक्तम्**	= कहा गया है
अध्यात्मम्	= अध्यात्म	**च**	= और
किम्	= क्या है?	**अधिदैवम्**	= अधिदैव
कर्म	= कर्म	**किम्**	= किसको
किम्	= क्या है?	**उच्यते**	= कहते हैं?

(गीता अध्याय 8 श्लोक 3 की फोटोकॉपी)

अक्षरम्, ब्रह्म, परमम्, स्वभावः, अध्यात्मम्, उच्यते,
भूतभावोद्भवकरः, विसर्गः, कर्मसञ्ज्ञितः॥ ३॥

इस प्रकार अर्जुनके प्रश्न करनेपर श्रीभगवान् बोले, अर्जुन!—

परमम्	= परम	**उच्यते**	= कहा जाता है (तथा)
अक्षरम्	= अक्षर		
ब्रह्म	= 'ब्रह्म' है,	**भूतभावोद्भवकरः**	= भूतोंके भावको उत्पन्न करनेवाला (जो)
स्वभावः	= अपना स्वरूप अर्थात् जीवात्मा		
		विसर्गः	= त्याग है, (वह)
अध्यात्मम्	= 'अध्यात्म' (नामसे)	**कर्मसञ्ज्ञितः**	= 'कर्म' नामसे कहा गया है।

(गीता अध्याय 8 श्लोक 5 की फोटोकॉपी)

अन्तकाले, च, माम्, एव, स्मरन्, मुक्त्वा, कलेवरम्,
यः, प्रयाति, सः, मद्भावम्, याति, न, अस्ति, अत्र, संशयः॥ ५॥

और

यः	= जो पुरुष	**सः**	= वह
अन्तकाले, च	= अन्तकालमें भी	**मद्भावम्**	= मेरे साक्षात् स्वरूपको
माम्	= मुझको		
एव	= ही	**याति**	= प्राप्त होता है—
स्मरन्	= स्मरण करता हुआ	**अत्र**	= इसमें (कुछ भी)
कलेवरम्	= शरीरको	**संशयः**	= संशय
मुक्त्वा	= त्यागकर	**न**	= नहीं
प्रयाति	= जाता है,	**अस्ति**	= है।

(गीता अध्याय 8 श्लोक 7 की फोटोकॉपी)

तस्मात्, सर्वेषु, कालेषु, माम्, अनुस्मर, युध्य, च,
मयि, अर्पितमनोबुद्धिः, माम्, एव, एष्यसि, असंशयम्॥ ७॥

तस्मात्	= इसलिये (हे अर्जुन! तू)	**मयि**	= मुझमें
सर्वेषु	= सब	**अर्पितमनोबुद्धिः**	= अर्पण किये हुए मन-बुद्धिसे युक्त होकर (तू)
कालेषु	= समयमें (निरन्तर)		
माम्	= मेरा	**असंशयम्**	= निःसन्देह
अनुस्मर	= स्मरण कर	**माम्**	= मुझको
च	= और	**एव**	= ही
युध्य	= युद्ध भी कर। (इस प्रकार)	**एष्यसि**	= प्राप्त होगा।

(गीता अध्याय 8 श्लोक 8 की फोटोकॉपी)

अभ्यासयोगयुक्तेन, चेतसा, नान्यगामिना,
परमम्, पुरुषम्, दिव्यम्, याति, पार्थ, अनुचिन्तयन्॥ ८ ॥

पार्थ = हे पार्थ! (यह नियम है कि)
अभ्यासयोगयुक्तेन = परमेश्वरके ध्यानके अभ्यासरूप योगसे युक्त
नान्यगामिना = दूसरी ओर न जानेवाले
चेतसा = चित्तसे
अनुचिन्तयन् = निरन्तर चिन्तन करता हुआ (मनुष्य)
परमम् = परम (प्रकाशस्वरूप)
दिव्यम् = दिव्य
पुरुषम् = पुरुषको अर्थात् परमेश्वरको (ही)
याति = प्राप्त होता है।

(गीता अध्याय 8 श्लोक 9 की फोटोकॉपी)

कविम्, पुराणम्, अनुशासितारम्, अणोः, अणीयांसम्,
अनुस्मरेत्, यः, ,सर्वस्य, धातारम्, अचिन्त्यरूपम्, आदित्यवर्णम्, तमसः, परस्तात्॥ ९ ॥

यः = जो पुरुष
कविम् = सर्वज्ञ,
पुराणम् = अनादि,
अनुशासितारम् = सबके नियन्ता, *
अणोः, अणीयांसम् = सूक्ष्मसे भी अति सूक्ष्म,
सर्वस्य = सबके
धातारम् = धारण-पोषण करनेवाले,
अचिन्त्यरूपम् = अचिन्त्यस्वरूप
आदित्यवर्णम् = सूर्यके सदृश नित्य चेतन प्रकाशरूप (और)
तमसः = अविद्यासे
परस्तात् = अति परे शुद्ध सच्चिदानन्दघन परमेश्वरका
अनुस्मरेत् = स्मरण करता है—

(गीता अध्याय 8 श्लोक 10 की फोटोकॉपी)

प्रयाणकाले, मनसा, अचलेन, भक्त्या, युक्तः, योगबलेन,
च, एव, भ्रुवोः, मध्ये, प्राणम्, आवेश्य, सम्यक्, सः, तम्,
परम्, पुरुषम्, उपैति, दिव्यम्॥ १० ॥

सः = वह
भक्त्या, युक्तः = भक्तियुक्त पुरुष
प्रयाणकाले = अन्तकालमें (भी)
योगबलेन = योगबलसे
भ्रुवोः = भृकुटीके
मध्ये = मध्यमें
प्राणम् = प्राणको
सम्यक् = अच्छी प्रकार
आवेश्य = स्थापित करके
च = फिर
अचलेन = निश्चल
मनसा = मनसे
(स्मरन्) = स्मरण करता हुआ
तम् = उस
दिव्यम् = दिव्यरूप
परम् = परम
पुरुषम् = पुरुष परमात्माको
एव = ही
उपैति = प्राप्त होता है—

(गीता अध्याय 8 श्लोक 12-13 की फोटोकॉपी)

सर्वद्वाराणि, संयम्य, मनः, हृदि, निरुध्य, च,
मूर्ध्नि, आधाय, आत्मनः, प्राणम्, आस्थितः, योगधारणाम्॥ १२ ॥
ओम्, इति, एकाक्षरम्, ब्रह्म, व्याहरन्, माम्, अनुस्मरन्,
यः, प्रयाति, त्यजन्, देहम्, सः, याति, परमाम्, गतिम्॥ १३ ॥

हे अर्जुन!—

सर्वद्वाराणि = सब इन्द्रियोंके द्वारोंको
संयम्य = रोककर
च = तथा
मनः = मनको
हृदि = हृदेशमें
निरुध्य = स्थिर करके, (फिर उस जीते हुए मनके द्वारा)
प्राणम् = प्राणको
मूर्ध्नि = मस्तकमें
आधाय = स्थापित करके
आत्मनः = परमात्मसम्बन्धी
योगधारणाम् = योगधारणामें
आस्थितः = स्थित होकर
यः = जो पुरुष
ओम् = 'ॐ'
इति = इस
एकाक्षरम् = एक अक्षररूप
ब्रह्म = ब्रह्मको
व्याहरन् = उच्चारण करता हुआ (और उसके अर्थस्वरूप)
माम् = मुझ निर्गुण ब्रह्मका
अनुस्मरन् = चिन्तन करता हुआ
देहम् = शरीरको
त्यजन् = त्यागकर
प्रयाति = जाता है,
सः = वह पुरुष
परमाम्, गतिम् = परमगतिको
याति = प्राप्त होता है।

(गीता अध्याय 15 श्लोक 4 की फोटोकॉपी)

ततः, पदम्, तत्, परिमार्गितव्यम्, यस्मिन्, गताः, न, निवर्तन्ति, भूयः, तम्, एव, च, आद्यम्, पुरुषम्, प्रपद्ये, यतः, प्रवृत्तिः, प्रसृता, पुराणी ॥ ४ ॥

ततः	= उसके पश्चात्	**पुराणी**	= पुरातन
तत्	= उस	**प्रवृत्तिः**	= संसारवृक्षकी प्रवृत्ति
पदम्	= परमपदरूप परमेश्वरको	**प्रसृता**	= विस्तारको प्राप्त हुई है,
परिमार्गितव्यम्	= भलीभाँति खोजना चाहिये,	**तम्, एव**	= उसी
यस्मिन्	= जिसमें	**आद्यम्, पुरुषम्**	= आदि-पुरुष नारायणके
गताः	= गये हुए पुरुष	**प्रपद्ये**	= मैं शरण हूँ—(इस प्रकार दृढ़ निश्चय करके उस परमेश्वरका मनन और निदिध्यासन करना चाहिये।)
भूयः	= फिर		
न, निवर्तन्ति	= लौटकर संसारमें नहीं आते		
च	= और		
यतः	= जिस परमेश्वरसे (इस)		

(गीता अध्याय 8 श्लोक 16 की फोटोकॉपी)

आब्रह्मभुवनात्, लोकाः, पुनरावर्तिनः, अर्जुन, माम्, उपेत्य, तु, कौन्तेय, पुनर्जन्म, न, विद्यते ॥ १६ ॥

क्योंकि—

अर्जुन	= हे अर्जुन!	**माम्**	= मुझको
आब्रह्मभुवनात्	= ब्रह्मलोकपर्यन्त	**उपेत्य**	= प्राप्त होकर
लोकाः	= सब लोक	**पुनर्जन्म**	= पुनर्जन्म
पुनरावर्तिनः	= पुनरावर्ती* हैं,	**न**	= नहीं
तु	= परंतु	**विद्यते**	= होता;
कौन्तेय	= हे कुन्तीपुत्र!		

श्रीमद्देवीभागवत के मुख्य पष्ठ की फोटोकॉपी

श्रीमद्देवीभागवत

[सचित्र, मोटा टाइप, केवल हिन्दी]

प्रकाशक एवं मुद्रक—

गीताप्रेस, गोरखपुर—२७३००५

(गोबिन्दभवन-कार्यालय, कोलकाता का संस्थान)

फोन : (०५५१) २३३४७२१, २३३१२५०; फैक्स : (०५५१) २३३६९९७

web : **gitapress.org** e-mail : **booksales@gitapress.org**

गीताप्रेस प्रकाशन **gitapressbookshop.in** से **online** खरीदें।

श्रीमद्देवीभागवत के पष्ठ 573-574 की फोटोकॉपी

देवीके द्वारा हिमालयको ज्ञानोपदेश—ब्रह्मस्वरूपका वर्णन

श्रीदेवीजी कहने लगीं—पर्वतराज! इस प्रकार योगयुक्त होकर मुझ ब्रह्मस्वरूपा देवीका ध्यान करे। यह ध्यान आसनपर भलीभाँति बैठकर अहैतुकी भक्तिके साथ करना चाहिये। उस ब्रह्मका क्या स्वरूप है—यह बतलाया जाता है। जो प्रकाशस्वरूप, सबके अत्यन्त समीपमें स्थित, हृदयरूप गुहामें स्थित होनेके कारण 'गुहाचर' नामसे प्रसिद्ध और महान् पद अर्थात् परम प्राप्य है—जितने भी चेष्टा करनेवाले, श्वास लेनेवाले, आँखोंको खोलने-मूँदनेवाले प्राणी हैं, सब उस ब्रह्ममें ही समर्पित हैं, उसीमें स्थित हैं। सत्, असत् सब कुछ वही है, वही सबके द्वारा वरण करनेयोग्य सर्वोत्कृष्ट है। वह समस्त प्रजाके ज्ञानसे परे है—अर्थात् किसीकी बुद्धिमें आनेवाला नहीं है। यह तुम जानो। जो परम प्रकाशरूप है, जो सूक्ष्मसे भी अत्यन्त सूक्ष्म है, जिसमें सम्पूर्ण लोक और उन लोकोंमें निवास करनेवाले प्राणी स्थित हैं, वही यह 'अक्षर ब्रह्म' है, वही सबके प्राण है, वही सबकी वाणी है और वही सबके मन है। वह यह परम सत्य और अमृत—अविनाशी तत्त्व है। सौम्य! उस वेधनेयोग्य लक्ष्यका तुम वेधन करो—मन लगाकर उसमें तन्मय हो जाओ।

सौम्य! उपनिषद्में कथित महान् अस्त्ररूप धनुष लेकर उसपर उपासनाद्वारा तीक्ष्ण किया हुआ बाण संधान करो और फिर भावानुगत चित्तके द्वारा उस बाणको खींचकर उस अक्षररूप ब्रह्मको ही लक्ष्य बनाकर वेधन करो। प्रणव (ॐ) धनुष है, जीवात्मा बाण है और ब्रह्मको उसका लक्ष्य कहा जाता है। प्रमादरहित—अत्यन्त तत्परतासे साधन-संलग्न होकर उसका वेधन करना चाहिये और बाणके समान उसमें तन्मय हो जाना चाहिये। जिस ब्रह्ममें स्वर्ग, पृथ्वी, अन्तरिक्ष (स्वर्ग और पृथ्वीके बीचका आकाश), सम्पूर्ण प्राणोंके सहित इन्द्रिययुक्त मनबुद्धिरूप अन्तःकरण ओत-प्रोत है, उस एकमात्र परमात्माको ही जाने, दूसरी सब बातोंको छोड़ दे। यही अमृतरूप परमात्माके पास पहुँचानेवाला पुल है। संसार-समुद्रसे पार होकर अमृतस्वरूप परमात्माको प्राप्त करानेका यही सुलभ साधन है। जिस प्रकार रथके चक्केमें अरे लगे होते हैं, उसी प्रकार शरीरकी सम्पूर्ण नाड़ियाँ हृदयमें एकत्र स्थित हैं। उस हृदयमें ही विविध रूपोंमें प्रकट होनेवाला परब्रह्म संचरण करता है—अन्तर्यामीरूपसे वर्तमान रहता है। इस आत्माका 'ॐ' के जपके साथ ध्यान करो। इससे अज्ञानमय अन्धकारसे सर्वथा परे और संसार-समुद्रसे उस पार जो ब्रह्म है, उसको पा जाओगे। तुम्हारा कल्याण हो। जो सदा जाननेवाला, जो सब ओरसे सब कुछ जाननेवाला है, जिसकी जगत्में यह महिमा है, वह यह सबका आत्मा ब्रह्म ब्रह्मलोकरूप दिव्य आकाशमें स्थित है। वह मनोमय है और सबके प्राण तथा शरीरका नियमन करनेवाला है। सब प्राणियोंके हृदयका आश्रय करके अन्नमय स्थूलशरीरमें स्थित है। धीर—बुद्धिमान् पुरुष विज्ञानके द्वारा जो आनन्दस्वरूप अमृत—अविनाशी ब्रह्म सर्वत्र प्रकाशित है, उसको भलीभाँति देख लेते हैं। उस कार्य-कारणरूप पुरुषोत्तमको देख लेनेपर इस जीवके हृदयकी गाँठ (अविद्या) टूट जाती है, सारे संशय नष्ट हो जाते हैं और सब शुभाशुभ कर्म क्षीण हो जाते हैं। वह निर्मल और निष्कल ब्रह्म प्रकाशमय पर-कोश—दिव्य परमधाममें विराजित है। वह शुभ्र—सर्वथा विशुद्ध और सम्पूर्ण प्रकाशमय वस्तुओंका भी प्रकाशक है। उसे आत्मज्ञानी पुरुष ही जानते हैं। उस स्वप्रकाशरूप परमधाममें—परमात्मामें न यह सूर्य प्रकाशित होता है, न चन्द्रमा या तारे ही प्रकाशित होते हैं। न वहाँ ये बिजलियाँ चमकती हैं। फिर, इस अग्निकी तो बात ही क्या है? उसके प्रकाशित होनेपर उसीके प्रकाशसे सब प्रकाशित होते हैं, उसीके प्रकाशसे यह सम्पूर्ण जगत् प्रकाशित है। वह अमृतस्वरूप ब्रह्म ही आगे है, ब्रह्म ही पीछे है, ब्रह्म ही दाहिनी तथा बायीं ओर है। वही नीचे-ऊपर फैला हुआ है। यह सम्पूर्ण विश्व सर्वश्रेष्ठ ब्रह्म ही है*।

Annexure No. 6

(गीता अध्याय 16 श्लोक 23-24 की फोटोकॉपी)

यः, शास्त्रविधिम्, उत्सृज्य, वर्तते, कामकारतः,
न, सः, सिद्धिम्, अवाप्नोति, न, सुखम्, न, पराम्, गतिम्॥ २३॥

और—

यः	= जो पुरुष	**सिद्धिम्**	= सिद्धिको
शास्त्रविधिम्	= शास्त्रविधिको	**अवाप्नोति**	= प्राप्त होता है,
उत्सृज्य	= त्यागकर	**न**	= न
कामकारतः	= अपनी इच्छासे मनमाना	**पराम्**	= परम
वर्तते	= आचरण करता है,	**गतिम्**	= गतिको (और)
सः	= वह	**न**	= न
न	= न	**सुखम्**	= सुखको ही।

तस्मात्, शास्त्रम्, प्रमाणम्, ते, कार्याकार्यव्यवस्थितौ,
ज्ञात्वा, शास्त्रविधानोक्तम्, कर्म, कर्तुम्, इह, अर्हसि॥ २४॥

तस्मात्	= इससे	**प्रमाणम्**	= प्रमाण है।
ते	= तेरे लिये	**(एवम्)**	= ऐसा
इह	= इस	**ज्ञात्वा**	= जानकर (तू)
कार्याकार्यव्यवस्थितौ	= कर्तव्य और अकर्तव्यकी व्यवस्थामें	**शास्त्रविधानोक्तम्**	= शास्त्रविधिसे नियत
		कर्म	= कर्म (ही)
		कर्तुम्	= करने
शास्त्रम्	= शास्त्र (ही)	**अर्हसि**	= योग्य है।